Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ

(सूरत अल्माइदा आयत : 10)

अनुवाद : अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जो ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए(कि) उनके लिए मग़फ़िरत और एक बहुत बड़ा अज्र है ।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 20

मूल्य
500 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

7 शव्वाल 1442 हिज्री कमरी 20 हिजरत 1400 हिज्री शम्सी 20 मई 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

तदफ़ीन के बाद क़ब्र पर नमाज़ जनाज़ा

(1247) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक आदमी फ़ौत हो गया, जिस की इयादत (रोगी का हाल पूछने और उसे ढारस देने के लिए उसके पास जाना) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे। वह रात को फ़ौत हुआ तो लोगों ने उसे रात को ही दफ़न कर दिया। जब सुबह हुई तो लोगों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हें किस ने रोका था कि मुझे सूचना दे देते। उन्होंने कहा रात थी और अंधेरा था इस लिए हमने नापसंद किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस की क़ब्र पर आए और नमाज़ (जनाज़ा) पढ़ी।

उस व्यक्ति की श्रेष्ठता जिस के बच्चे का देहांत हो जाए

(1248) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया लोगों में से जिस मुस्लमान के तीन बच्चे मर जाएं जिन्हें अभी नेकी बदी का अंतर नहीं हो तो अवश्य अल्लाह तआला अपनी इस रहमत के अधीन जो उनके लिए है उसको जन्नत में दाख़िल करेगा।

(1249) हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि महिलाओं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा हमारे लिए भी एक दिन निर्धारित फ़रमाएं। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें उपदेश दिया। फ़रमाया : जिस औरत के तीन बच्चे मर जाएं वे उसके लिए आग से पनाह होंगे। इस पर एक महिला ने कहा अगर दो (मर जाएं?) आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तो भी।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताबुल जनायज़, प्रकाशन क़ादियान 2006)

हम जो बार बार इश्तहिार देते हैं और लोगों को तजुर्बा के लिए बुलाते हैं हमारा उद्देश्य इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं कि लोगों को ख़ुदा तआला की तरफ बुलाएं। जिसे हम ने ख़ुद देखा है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ख़ुदा तआला की हस्ती के सबूत

तक़दीर अर्थात दुनिया के अंदर समस्त चीज़ों का एक अंदाज़ा और क़ानून के साथ चलना और ठहरना इस बात को प्रमाणित करता है कि इस का कोई मुक़-द्दर अर्थात अंदाज़ा बाँधने वाला ज़रूर है। घड़ी को यदि किसी ने बिना ईरादा नहीं बनाया तो वह क्यों इतना बाक़ायदा निज़ाम के साथ अपनी हरकत को क़ायम रखकर हमारे लिए लाभदायक होती है। ऐसा ही आसमान की घड़ी कि इस का क्रम और बाक़ायदा और नियम से होना प्रकट करता है कि वह किसी विशेष इरादा, उद्देश्य और लक्ष्य और फ़ायदा के लिए बनाई गई है। इस तरह इन्सान सृष्टि से सृष्टा को और तक़दीर से मुक़द्दर को पहचान सकता है

परन्तु इससे बढ़कर अल्लाह तआला ने अपनी हस्ती के प्रमाण का एक और माध्यम स्थापित किया हुआ है। और वह यह है कि वह समय से पहले अपने चुने हुओं को किसी तक़दीर से सूचना दे देता है और उनको बता देता है कि अमुक़ समय और अमुक़ दिन में मैंने अमुक बात को मुक़द्दर कर दिया है अत: वह व्यक्ति जिसको ख़ुदा ने इस काम के लिए चुना हुआ होता है। पहले से लोगों को सूचना दे देता है कि ऐसा होगा और फिर ऐसा ही हो जाता है जैसा कि उस ने कहा था। अल्लाह तआला की हस्ती के सबूत के लिए यह ऐसी दलील है कि हर एक नास्तिक इस अवसर पर शर्मिंदा और निरुत्तर हो जाता है। अल्लाह तआला ने हमको हज़ारों ऐसे निशान प्रदान किए हैं जिन से अल्लाह तआला की हस्ती पर मज़बूत ईमान पैदा होता है। हमारी जमाअत के इस क़दर लोग इस स्थान मौजूद हैं। कौन है जिसने कम से कम दो-चार निशान नहीं देखे और यदि आप चाहें तो कई सौ आदमी को बाहर से बुलवाएँ और उन से पूछें। इतने नेक और सद-आचरण और मुत्तक़ी और सालिह लोग जो कि हर तरह से अक़्ल और बुद्धिमत्ता रखते हैं ओर सांसारिक रूप अपने उचित रोज़गार वाले हैं। क्या उनको तसल्ली नहीं हुई। क्या उन्होंने ऐसी बातें नहीं देखें जिन पर इन्सान कभी सामर्थ्य वान नहीं है। यदि उनसे प्रश्न किया जाये तो प्रत्येक अपने आपको प्रथम दर्जा का गवाह क़रार देगा। क्या संभव है कि ऐसे हर वर्ग के इन्सान,जिन में बुद्धिमान और गुणी और वैद्य और डाक्टर और सौदागर और सम्मानीय सज्जादा नशीन और वकील शेष पृष्ठ 11 पर

जैसे बादशाहों के निकट सुरक्षा कर्मी होते हैं वैसे ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगे पीछे مُعَقِّبٰت हैं सहाबा भी मेरे निकट उन مُعَقِّبٰت में से थे जो ख़ुदा तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त के लिए निर्धारित कर दिए थे

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत रअद की आयत 12 لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنۡۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَمِنۡ خَلۡفِهٖ يَحۡفَظُوۡنَهٗ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ के विस्तार में फ़रमातेन हैं : لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنۡۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَمِنۡ خَلۡفِهٖ- اَیۡ مَلَائِكَةٌ يَتَعَاقَبُوۡنَ عَلَيۡهِ حَافِظِيۡنَ -

مُعَقِّبٰت से मुराद वे फ़रिश्तों की जमात है जो हिफ़ाज़त के लिए एक के बाद एक आते हैं। (मुफ़रिदात)

फ़रमाया : لَهٗ की ज़मीर मेरे निकट आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात की तरफ़ फिरती है अर्थात जैसे बादशाहों के निकट सुरक्षा कर्मी होते हैं वैसे ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आगे पीछे مُعَقِّبٰت हैं। इन अर्थों का समर्थन एक हदीस से भी होता है। इसलिए अबू नईम ने अल्द्लायेल में और तिबरानी ने अपनी मोअज्जम कबीर में नक़ल किया है कि आमिर इब्ने तुफ़ैल और अर्बुद इब्ने क़ैस दो व्यक्ति आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए। आमिर ने कहा कि यदि मैं मुस्लमान हो जाऊं तो क्या वलायत अमर अर्थात अपने बाद ख़िलाफ़त मुझे दे दी जाएगी? हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम्हारी इस शर्त का नतीजा यह होगा कि ख़िलाफ़त तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को कभी नहीं मिलेगी। उसने इस बात से नाराज़ हो कर कहा कि फिर में ऐसे सवार लाऊँगा कि तुम याद रखोगे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ख़ुदा तुम्हें इस की तौफ़ीक़ ही नहीं देगा। इस पर वे दोनों नाराज़ हो कर चले गए। रास्ता में अर्बुद ने कहा आओ फिर वापिस चलें। मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहो शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रोपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-12)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ वाक़फ़ीन नौ बच्चों की हुज़ूर अनवर के साथ ख़ुसूसी क्लासिज़

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

31 मई 2015 ई (दिनांक इतवार)

वाक़फ़ीन नौ बच्चों की हुज़ूर अनवर के साथ ख़ुसूसी क्लासिज़

इसके बाद प्रिय हसन अहमद ने "क़ुरआन और विज्ञान" के विषय पर निर्मलिखित मज़मून प्रस्तुत किया

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

"क़ुरआन ने लोगों को विज्ञान की शिक्षा से रोका नहीं बल्कि फ़रमाता है :قُلِ انۡظُرُوۡا مَاذَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ग़ौर करो ज़मीन और आसमान के जन्म में (सूरा यूनुस : 102) आसमान से अर्थात आसमानी ज्ञान और ज़मीन से पृथ्वी अर्थात जियोलोजी, बैलोजी, आर्कियोलॉजी, भौतिक विज्ञान इत्यादि ज्ञान मुराद हैं। यदि ख़ुदा के निकट इन ज्ञान को पढ़ने का परिणाम धर्म से नफ़रत होता तो क़ुरआन कहता इन ज्ञान को कभी न पढ़ना। परन्तु इसके विपरीत वह तो कहता है , ज़रूर ग़ौर करो, इन ज्ञान को पढ़ो और अच्छी तरह छानबीन करो क्योंकि उसे मालूम है ज्ञान में जितनी तरक़्क़ी होगी उस की तसदीक़ होगी। क़ुरआन-ए-करीम की ये आयत भी विज्ञान की ओर ध्यान दिलाती है फ़रमाया : ज़मीन और आसमान के जन्म में और दिन रात के आगे पीछे में अक़्लमंदों के लिए निशान हैं। ज़मीन और आसमान के जन्म में ग़ौर करने से वह यह परिणाम निकालते हैं कि कोई चीज़ व्यर्थ और बेफ़ाइदा पैदा नहीं की गई (आल-ए-इमरान 191-192) अब देखो इस आयत में विज्ञान के सम्बन्ध में कैसी वसीअ शिक्षा दी गई है। चीज़ों के लाभ और फिर यह परिणाम कि कोई चीज़ बेफ़ाइदा पैदा नहीं की गई यह बिना जाँच पड़ताल के कैसे मालूम हो सकता था। अत: क़ुरआन ने विशेष वस्तुओं की ओर ध्यान दिलाया है और साथ ही यह सुनहरी असल भी सिखा दिया है कि किसी चीज़ को बेफ़ाइदा न समझो। हमने कोई चीज़ व्यर्थ पैदा नहीं की। मानो लंबी जाँच पड़ताल जारी रखने और जल्दी करने वाले परिणामों से बचने का आदेश दिया गया है अत: इस्लाम विज्ञान की ओर ध्यान दिलाता है और विज्ञान की तहक़ीक़ातों से इस्लाम का समर्थन होता है।"

(अनवारुल ऊलूम, भाग 9 पृष्ठ 501से 503)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

"अंत में मैं नौ जवानों से अपील करता हूँ कि इस्लाम धर्म का अध्ययन करो, क़ुरआन को हाथ में लो और इस पर ग़ौर करो। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि विज्ञान धर्म के विरुद्ध नहीं है। कोई सच्ची विज्ञान धर्म के विरुद्ध नहीं और कोई सच्चा धर्म विज्ञान के विरुद्ध नहीं हो सकता।

तुम अपने धर्म की क़दर करो और इस का सत्कार करो। इस्लामी रूह अपने अंदर पैदा करो। फिर समस्त प्रयास कामयाब होंगे । तुम क़ुरआन को हाथ में लो, उसका अध्ययन करो, उसको ग़ौर से study करो। इस किताब का सत्कार करो। इसकी आयात पर हंसी न करो। केवल كُلُوۡا وَاشۡرَبُوۡا ही याद न हो बल्कि धर्म भी सीखो। याद रखों इस में वह ज्ञान हैं जो समस्त दुनिया की सभ्यता को हेच कर देंगे। तुम यदि इस्लाम का सच्चा उदाहरण इख़तियार करोगे तो तुम को रुहानी और जस्मानी दोनों मामलों में संसार पर बरतरी प्राप्त होगी। ला-इलाहा इल-लल्लाह का नारा फिर बुलंद होगा। और इस्लाम की हुकूमत आज से तेराह सौ वर्ष पूर्व की तरह फिर संसार पर क़ायम होगी। इन शा अल्लाह

(अनवारुल ऊलूम, भाग 9 पृष्ठ 518 से 519)

प्रोग्राम प्रस्तुत किए जाने के बाद हुज़ूर अनवर ने वाक़फ़ीन नौ बच्चों को प्रश्न प्रस्तुत करने की आज्ञा मर्हमत फ़रमाई :

एक वक़्फ़े नौ ने प्रश्न किया : जैसा कि हुज़ूर प्रत्येक ख़ुतबा में फ़रमाते हैं कि प्रत्येक अहमदी को जमाअत के साथ अपना सम्बन्ध और मुहब्बत पुख़्ता करनी चाहिए। इस सिलसिले में मेरा प्रश्न है कि एक वक़्फ़ नौ विद्यार्थी अपने सम्बन्ध को जमाअत से प्रकट और पुख़्ता करने के लिए क्या कर सकता है?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : सबसे पहला काम यह करना चाहिए कि यदि आप अपने आपको वक़्फ़ नौ समझते हैं और यह विचार करते हैं कि हमारे माँ बाप ने हमें वक़्फ़ किया तो किस लिए किया। क़ुरआन-ए-करीम की इस आयत पर अनुकरण करते हुए किया जिस में हज़रत मर्यम की माता ने कहा था कि जो कुछ मेरे गर्भ में है, मेरे पेट में है में उसे तेरे लिए वक़्फ़ करती हूँ। और यह ख़ुदा तआला को कहा था? तो आपके माता पिता ने आपको ख़ुदा तआला के लिए वक़्फ़ किया है। तो पहले यह समझो कि ख़ुदा है कौन। और जो ख़ुदा तआला ने जन्म का उद्देश्य बताया है उस को समझो। और वह क्या बताया है? कि मेरी इबादत करो। इस लिए अल्लाह से सम्बन्ध पैदा करो और पहली बात तो यह है कि इस आयु में पहले तुम लोगों को पाँच नमाज़ों की ओर ध्यान देना चाहिए। बहुत सारे बच्चे अपने घरों में देख लेते हैं कि कितनी नमाज़ें पढ़ते हैं। या सर्दीयों में या गरमीयों में मौसम की शिद्दत के कारण से यदि नमाज़ें कहीं जमा हो जाएं या मेरे दौरों के कारण से नमाज़ें जमा हो जाएं तो समझते हैं कि तीन नमाज़ें हैं। तो याद रखें कि नमाज़ें पाँच हैं। और समय पर पाँच नमाज़ें अदा करो। पहली बात तो यह कि अल्लाह से सम्बन्ध मज़बूत करो। फिर धर्म का ज्ञान प्राप्त करो। क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ो इसका ज्ञान प्राप्त करो। इसको समझो फिर ये इतने ज़्यादा हिदायतों पर जो board लगाए हुए हैं । उन पर अनुकरण करने का प्रयास करो। एक वक़्फ़ नौ को यही करना चाहिए।

एक वक्फ़े नौ ने अर्ज़ की कि मेरा प्रश्न यह है कि मैं आपको नज़म के दो शेअर सुना सकता हूँ?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया यह प्रश्न तो नहीं उत्तर है। मुस्कुराते हुए फ़रमाया सुना दो

इस लिए बच्चे ने निर्मलिखित दो शेअर सुनाए

सरज़मीन अरब से चली रोशनी
आज तक है सफ़र में वही रोशनी
हम पर एहसान किया है हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) आप ने
हम अंधेरों में थे हम को दी रोशनी

एक वक्फ़े नौ ने प्रश्न किया : हज़रत-ए-नूह की कश्ती बनने में कितना टाइम लगा था? और किसी मख़लूक़ ने उनकी सहायता की थी?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : टाइम तो नहीं लिखा हुआ। जब कश्ती बना रहे थे। तो साथ जो उनकी क़ौम थी वहां से गुज़रती थी। क़ुरआन शरीफ़ तो यही बताता है कि वह हंसते थे कि हमारे यहां तो पानी नहीं है, कुछ भी नहीं है, तो कश्ती किस लिए बना रहे हो। हज़रत-ए-नूह अलैहिस्सलाम ने यही उत्तर दिया था आज तुम मुझ पर हंस रहे हो । कल जब तुम्हें इसकी एहमीयत पता चलेगी तो फिर तुम पर मैं हँसूँगा। कश्ती बनाने में कुछ अरसा तो लगा ही होगा और शायद सहायता भी करने वाले उनकी सहायता करते हों जो उन को मानने वाले थे। निर्धारित समय देकर precisely नहीं बताया जा सकता।

एक वक्फ़े नौ बच्चे ने प्रश्न किया : मेरा प्रश्न है कि आप मुझे एक pen देंगे?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यह प्रश्न है? यह तो बहुत बड़ा प्रश्न है बैठ जाओ। बाद में किसी समय मुझ से दफ़्तर में ले लेना।

एक वक्फ़े नौ ने कहा कि मेरा प्रश्न है कि जामिया में अपनी मर्ज़ी के कपड़े क्यों नहीं पहन सकते।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने फ़रमाया : किस ने कहा नहीं पहन सकते।

इस पर वक़्फ़ नौ लड़के ने कहा कि मैं जामिया गया तो उन सबने एक जैसे कपड़े पहने हुए थे।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया तुम्हारे स्कूल में यूनीफार्म नहीं है।

इस पर उस ने कहा कि नहीं है।

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

“मैं तो यह जानता हूँ कि कोई व्यक्ति मोमिन और मुस्लमान नहीं बन सकता जब तक अबू बकर, उमर, उस्मान, अली रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की भांति बनने का प्रयास न करे” (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा ए राशिद दो नूरों वाले हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन

नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग में, हम लोगों में से एक को दूसरे से बेहतर क़रार दिया करते थे और समझते थे कि हज़रत अबू बकर सबसे बेहतर हैं, फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब, फिर हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुदा की कसम अल्लाह तआला ने शेख़ेयेन को और तीसरे जो दो नूरो वाले हैं हर एक को इस्लाम के दरवाज़े और ख़ैरुल्इनाम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की फ़ौज के हर अव्वल दस्ते बनाया है (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

पंद्रह मरहूमीन आदरणीय मुहम्मद सादिक़ साहिब दुर्गा रामपूरी बंगलादेश, आदरणीया मुख़तारां बी-बी साहिबा पत्नी रशीद अहमद अठवाल साहिब दारुल यमन रब्वाह, आदरणीय मंज़ूर अहमद शाद साहिब लंदन, आदरणीया हमीदा अख़्तर साहिबा पत्नी अब्दुर्रहमान सलीम साहिब अमरीका, आदरणीय नासिर पीटर लुतसीन साहिब जर्मनी, आदरणीया रज़िया तनवीर साहिबा पत्नी ख़लील अहमद तनवीर साहिब वायस प्रिंसिपल जामिआ अहमदिया रब्वाह, आदरणीय मियां मंज़ूर अहमद ग़ालिब साहिब आफ़ सरगोधा, आदरणीया बुशरा हमीद अनवर अदनी साहिबा पत्नी हमीद अनवर साहिब आफ़ यमन, आदरणीया नूरुस्सबाह ज़फ़र साहिबा पत्नी मुहम्मद अफ़ज़ल ज़फ़र साहिब मुरब्बी सिलसिला कीनीया, आदरणीय सुलतान अली रिहान साहिब, आदरणीय मौलवी ग़ुलाम क़ादिर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला जम्मू कश्मीर, आदरणीया महमूदा बेग़म साहिबा पत्नी मुहम्मद सादिक़ साहिब आरिफ़ दरवेश क़ादियान, आदरणीय ख़ालिद सादतुल्लाह मिसरी साहिब आफ़ उर्दन, आदरणीय मुहम्मद मुनीर साहिब दारुल फ़ज़ल रब्वाह और आदरणीय मास्टर नज़ीर अहमद साहिब दारुल बरकात रब्वाह का वर्णन और नमाज़ ए जनाज़ा ग़ायब

इस्लाम टीम के तैयार किया गया कुरान ए करीम के नए सर्च इंजन के पहले वर्ज़न के आरंभ का ऐलान

अल-जज़ायर और पाकिस्तान में अहमदियों की मुख़ालिफ़त के दृष्टिगत विशेषता दुआओं की पुनः तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 9 अप्रैल 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन चल रहा था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का क्या स्थान था, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु उनको किस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में भी और इसके बाद भी देखते थे। इस बारे में रिवायत है। नाफ़े ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है। उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग में हम लोगों में से एक को दूसरे से बेहतर क़रार दिया करते थे और समझते थे कि हज़रत अबू बकर सबसे बेहतर हैं। फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब। फिर हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु। बुख़ारी की रिवायत है।

(सही बुख़ारी पुस्तक फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाब फ़ज़ल अबी बक्र बादन्नबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हदीस नंबर 3655)

और एक दूसरी रिवायत बुख़ारी में इस तरह है। नाफ़े ने हज़रत इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि हम नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग में थे। किसी को भी हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के बराबर नहीं समझा करते थे। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बराबर। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के बराबर। फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा को छोड़ देते थे। उनमें से किसी को एक दूसरे से अफ़ज़ल नहीं समझते थे।

(सही बुख़ारी पुस्तक फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाब मनाक़िब उस्मान .... हदीस 3697)

फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद बेहतरीन लोगों में शुमार होने के बारे में जो रिवायात मिलती हैं इस में मुहम्मद बिन हनफ़ीया की रिवायत है वह वर्णन करते हैं कि मैंने अपने पिता हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद लोगों में सबसे बेहतर कौन है? उन्होंने कहा अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु। मैंने पूछा उनके बाद कौन? उन्होंने कहा फिर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु। फिर मैंने डरते हुए पूछा कि फिर कौन? तो उन्होंने जवाब दिया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु। फिर मैंने कहा हे मेरे बाप उनके बाद क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हु? तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया कि मैं तो मुस्लमानों में से एक आम आदमी हूँ।

(सुंन अबी दाऊद पुस्तक अस्सुन्नत बाब फित्तफसील हदीस नम्बर 4629)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से जो सम्बन्ध था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नज़र में उनका जो स्थान था उस का अनुमान इस बात से होता है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से द्वेष रखने वाले एक व्यक्ति का जनाज़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नहीं पढ़ा। इस की तफ़सील इस प्रकार वर्णन हुई है। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक व्यक्ति का जनाज़ा लाया गया ताकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ा दें लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी नमाज़ जनाज़ा नहीं पढ़ाई। किसी ने अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! इससे पहले हमने कभी नहीं देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किसी की नमाज़ जनाज़ा छोड़ी हो। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह व्यक्ति उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से द्वेष रखता था। अत: अल्लाह तआला भी इस से दुश्मनी रखता है।

(सुंन अल्-तिरमज़ी अबवाब मनाकिब बाब फ़ी मनाक़िब उस्मान... हदीस नंबर 3709)

फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के इन्साफ़ के बारे में रिवायत आती है कि किस तरह उन्होंने अपने भाई का भी क़सूर साबित होने पर उनको सज़ा देने को कहा। अबैदुल्लाह बिन अदी ने वर्णन किया हज़रत मिसवर बिन मख़रमा रज़ियल्लाहु अन्हु और अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु बिन अस्वद बिन अब्दे यग़ूस दोनों ने मुझे कहा कि तुम्हें क्या बात रोकती है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से उनके भाई वलीद के सम्बन्ध में बात चीत करो क्योंकि लोगों ने उनके सम्बन्ध में कुछ ग़लत बातों की वजह से बहुत चिमीगोइयां की हैं तो मैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया। वह नमाज़ के लिए बाहर आए। मैंने कहा आप रज़ियल्लाहु अन्हु से मुझे एक काम है और वह आप रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़ैर ख़्वाही है। हज़रत

उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा भले आदमी तुम से ...। मुअम्र ने कहा। मैं समझता हूँ उन्होंने कहा है उनका पैग़ाम ले के आया है तू। फिर कहा मैं तुमसे अल्लाह की पनाह मांगता हूँ। यह सुनकर वह व्यक्ति जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया था वहां से चल दिया और उन लोगों के पास वापिस आया। इतने में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का पैग़ाम्बर आया और में उनके पास गया। उन्होंने पूछा तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही क्या है? कहता था नाँ आपकी ख़ैर ख़्वाही चाहता था। तो मैंने कहा अल्लाह सुब्हाना ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सच्चाई के साथ मबऊस फ़रमाया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर पुस्तक नाज़िल की और आप रज़ियल्लाहु अन्हु भी उन्ही लोगों में से हैं जिन्हों ने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दावत क़बूल की और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने दो हिजरतें कीं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का साथ दिया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर का तरीक देखा और फिर मैंने कहा कि वलीद जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई थे उसके सम्बन्ध में लोग बहुत कुछ कह चुके हैं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझ से पूछा और कहा क्या तुम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ज़माना पाया? मैंने कहा नहीं लेकिन आप रज़ियल्लाहु अन्हु के इलम से वे बातें मुझे पहुंची हैं। ज़माना तो नहीं पाया लेकिन वे बातें मुझ तक पहुंची हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग की थीं और जो एक कुँवारी औरत को भी उस के पर्दे में पहुँचती हैं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि इसके बाद। अल्लाह ने वास्तव में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सच्चाई के साथ भेजा और में उन लोगों में से हूँ जिन्हों ने अल्लाह और उसके रसूल की दावत क़बूल की और में उन समस्त बातों पर ईमान लाया जिनके साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भेजे गए और मैंने दो हिजरतें भी कीं जैसा कि तुम ने कहा और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमके साथ रहा और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बैअत की और अल्लाह की क़सम मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ना-फ़रमानी नहीं की और न आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कोई धोखा किया यहां तक कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वफ़ात दी। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु भी मेरे लिए वैसे ही आज्ञाकारी रहे। हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी वैसे ही आज्ञाकारी रहे, उनकी भी मैंने इताअत की। फिर मुझे ख़लीफ़ा बनाया गया तो क्या मेरा भी वही हक़ नहीं जो उनका है, जो पहले दो खलिफ़ा का है। मैंने कहा क्यों नहीं। तो उन्होंने फ़रमाया फिर क्या बातें हैं जो तुम्हारी तरफ़ से मुझे पहुँचती रहती हैं और यह जो वलीद के मुआमले के सम्बन्ध में तुम ने वर्णन किया है तो हम इन शा अल्लाह उस को वाजिबी सज़ा देंगे अर्थात जो सज़ा इस जुर्म के लिए है जो जुर्म उस के बारे में कहा जा रहा है कि उसने किया तो उस की सज़ा देंगे। फिर उस के बाद उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और उनसे फ़रमाया कि इसको कोड़े लगाऐं तो उन्होंने उस को अस्सी कोड़े लगाए।

(सही बुख़ारी पुस्तक असहाबुन्नबी बाब मनाक़िब उसमान हदीस 3696)

हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली अल्लाह शाह साहिब इस की व्याख्या में वर्णन करते हैं। यह बुख़ारी की रिवायत है कि "वलीद बिन उक़बा के ख़िलाफ़ ताज़ीर आयद करने का जो वर्णन है इसका सम्बन्ध शराब पीने के आरोप से है। गवाही से साबित होने पर कि वह ज़माना ए-जाहिलीयत वाली शराब ही थी न कि मुनक्का या खजूर का शर्बत। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिश्तेदारी का ख्याल नहीं फ़रमाया बल्कि रिश्तेदारी की वजह से उसे दो गुना सज़ा दी। बजाय चालीस के अस्सी कोड़े लगवाए और ये संख्या हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के कर्म से साबित थी।" (उर्दू अनुवाद सही बुख़ारी भाग 7 पृष्ठ 192 प्रकाशन नज़ारत इशाअत रब्वाह)

फिर एक रिवायत में आता है अता बिन यज़ीद ने उन्हें ख़बर दी कि हुमरान ने जो कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा ग़ुलाम थे उन्हें बताया कि उन्होंने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि उन्होंने एक बर्तन मंगवाया और अपने दोनों हाथ तीन बार पानी डाल कर धोय। फिर अपना दायाँ हाथ बर्तन में डाला और कुल्ली की और नाक साफ़ किया। फिर अपना मुँह और दोनों हाथ कोहनियों तक तीन बार धोय फिर अपने सिर का मस्ह किया फिर अपने दोनों पांव टख़नों तक तीन तीन बार धोए। फिर कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि जिसने मेरे इस वुज़ू की तरह वुज़ू किया और फिर इस तरह दो रकातें नमाज़ पढ़ीं कि उनमें अपने नफ़्स से बातें न कीं तो जो गुनाह भी इस से पहले हो चुके हैं उन सबसे उस की मग़फ़िरत की जाएगी।

(सही बुख़ारी पुस्तक अल्वज़ू बाबुल वज़ू ,सलासा सलास हदीस 159)

जुमा के दिन दूसरी अज़ान का जो इज़ाफ़ा हुआ है यह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के युग में हुआ अर्थात पहली अज़ान जो होती है। इस की तफ़सील इस प्रकार वर्णन हुई है। ज़ोहरी ने सायब बिन यज़ीद से रिवायत की कि जुमा के दिन पहली अज़ान नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हा के युग में उस वक़्त हुआ करती थी जब इमाम मिंबर पर बैठता था। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़माना हुआ और लोग बहुत हो गए तो उन्होंने ज़ौरा में तीसरी अज़ान बढ़ा दी। अबू अब्दुल्लाह ने कहा कि ज़ौरा के बाज़ार में एक स्थान है।

(सही बुख़ारी पुस्तक अल्जुअतो बाबुल आज़ान यौमुन हदीस 912)

फ़िक़्हा अहमदिया में भी इस के सम्बन्ध में हदीस के हवाले से लिखा हुआ है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हा के ज़माना में जुमा के दिन मिंबर के पास (जो वास्तव में मस्जिद के अंदर रखा हुआ था) एक ही अज़ान दी जाती थी। बाद में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना में दूसरी अज़ान का रिवाज पड़ा जो मस्जिद के दरवाज़े पर पड़े हुए एक बड़े पत्थर पर खड़े हो कर दी जाती थी जिसका नाम ज़ौरा था।"

(फ़िक़्हा अहमदिया (इबादात पृष्ठ 122)

सही बुख़ारी की शरह "नेअमतुल बारी" में इस हदीस की शरह में लिखा है। "इब्ने शहाब ज़ोहरी ने सायब से रिवायत की है कि इस बाब की हदीस में इस को तीसरी अज़ान जो कहा है वह इक़ामत के एतबार से है।"

(नाम अलबारी फ़ी शरह सही बुख़ारी भाग 2 पृष्ठ 837 हदीस नंबर 912 रूमी पब्लिकेशन लाहोर 2013 ई.)

पहले दो अज़ानें थीं। तीसरी अज़ान दिलवाई जाती थी। पहली रिवायत जो मैंने पढ़ी थी इसमें लिखा था नाँ कि लोग बहुत हो गए तो उन्होंने ज़ौरा में तीसरी अज़ान बढ़ा दी। तीसरी अज़ान से मुराद यह है कि पहली अज़ान, दूसरी अज़ान यह और तकबीर जो है इस को भी अज़ान के नाम से कहा गया है इस तरह तीन दफ़ा नमाज़ के लिए बुलाया जाता है।

ईद के दिन जुमा की नमाज़ से छूट के बारे में भी रिवायत मिलती है। इब्ने अज़्हर आज़ाद करदा ग़ुलाम अबू उबैद वर्णन करता है कि उसने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की अनुकरण में एक ईदुल अज़्हा के दिन नमाज़ई-ए- ईद अदा की। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुत्बा से पूर्व नमाज़ पढ़ाई। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों से ख़िताब फ़रमाया और कहा लोगो! वास्तव में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुम्हें इन दो ईदों में रोज़ा रखने से मना फ़रमाया है। उनमें से एक तो रोज़ों के इफ़्तार होने की ख़ुशी में ईद का दिन है और दूसरा वह दिन है जब तुम अपनी क़ुर्बानीयों में से खाते हो। अबू उबैयद कहता है कि फिर उसने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के युग में आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे एक ईद पढ़ी। वह जुमा का दिन था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुत्बा से पूर्व नमाज़ पढ़ाई। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों से ख़िताब फ़रमाया और कहा लोगो! यह वह दिन है जिसमें तुम्हारे लिए दो ईदें इकट्ठी हो गई हैं। अतः मदीना के आस पास में रहने वालों में से जो जुमा का इंतिज़ार करना चाहता है तो वह इंतिज़ार कर सकता है और जो वापिस जाना पसंद करता है तो इस को मेरी तरफ़ से वापिस जाने की आज्ञा है।

(सही बुख़ारी पुस्तक किताबुल अज़ाही बाब मा कूकलो सल लहूमुल अजाही वमा यतज़व्वदो मिन्हा हदीस 5571-5572)

फ़िक़्हा अहमदिया में एक चीज़ जो लिखी गई है उस पर मुझे तो अभी तक कोई वाज़िह सबूत नहीं मिले। वहां यह लिखा हुआ है कि यदि जुमा और ईद एक रोज़ जमा हो जाएं तो ईद की नमाज़ के बाद न जुमा पढ़ा जाए और न ज़ुहर बल्कि अस्र के वक़्त में अस्र की नमाज़ पढ़ी जाए।

"इस लिए अता बिन अबी रबाह कहते हैं कि एक-बार जुमा और ईदुल फितर दोनों एक दिन में इकट्ठे हो गए। हज़रत अबद अल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया एक दिन में दो ईदें जमा हो गई हैं उनको इकट्ठा करके पढ़ा जाएगा। इस लिए आपने दोनों के लिए दो रकातें दोपहर से पहले पढ़ीं। इसके बाद अस्र तक कोई नमाज़ ना पढ़ी। अर्थात उस दिन सिर्फ नमाज़-ए-अस्र अदा की।"

(फ़िक़्ह अहमदिया(इबादात पृष्ठ 177)

इस बारे में अभी मज़ीद तहक़ीक़ की ज़रूरत है। हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला भी यही फ़रमाया था। और तहक़ीक़ की थी।

(ख़ुतबात-ए-ताहेर भाग 6 पृष्ठ 374 ख़ुत्त्बा जुमा वर्णन फ़र्मूदा 29 मई 1987 ई.)

पहले मेरा ख़्याल था कि ज़रूरत नहीं फिर क्योंकि कोई और ऐसी रिवायात नहीं मिलें जो सीधे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कर्यो से या अमल से साबित होती हो जबकि ज़ुहर की नमाज़ भी छोड़ी गई हो। यही एक रिवायत है जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने की। तो इस बारे में मज़ीद तहक़ीक़ की ज़रूरत है। फ़िक़्हां दुबारा रिवायज़ (revise) हो रहा है। मेरा ख़्याल है इस बात को मज़ीद ग़ौर से देखने की ज़रूरत है कि कहाँ तक यह सही है कि ज़ुहर की नमाज़ भी न पढ़ी जाए। जुमा तो ठीक है नहीं पढ़ा जाएगा लेकिन यह कहना कि ज़ुहर की नमाज़ भी नहीं पढ़ी जाए इस में सिवाए उस रिवायत के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सीधे या ख़ुलफ़ाए राशिदीन से सीधे कोई ऐसी रिवायत नहीं मिलती या अभी तक सामने नहीं आई। जहां तक मैंने तहक़ीक़ करवाई है।

जुमा के दिन नहाने के बारे में रिवायत है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु जुमा के दिन लोगों को ख़ुत्त्बा दे रहे थे कि हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु दाख़िल हुए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके सम्बन्ध में इशारा करते हुए फ़रमाया। लोगों को क्या हो गया है कि वह अज़ान के बाद भी देर से आते हैं? इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा हे अमीरुल मोमिनीन! मैं तो अज़ान सुनते ही वुज़ू कर के चला आया हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा सिर्फ वुज़ू। क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए नहीं सुना कि जब तुम में से कोई जुमा के लिए आए तो चाहिए कि वह नहाया करे।

(सही मुस्लिम पुस्तक हदीस 1956)

यदि पानी उपलब्ध है, सहूलतें उपलब्ध हैं तो नहाना ज़रूरी है। "सिलसिला अहादीस में दूसरे सहाबा की निसबत हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्फ़ू अहादीस बहुत कम मर्वी हैं। आपकी समस्त रिवायतों की संख्या 146 है जिनमें तीन मुत्तफ़िक़ अलैह हैं अर्थात बुख़ारी और मुस्लिम दोनों में मौजूद हैं और आठ सिर्फ़ बुख़ारी में और पाँच सिर्फ़ मुस्लिम में हैं। इस तरह सहीहीन में आप रज़ियल्लाहु अन्हु की कुल सोला हदीसें हैं। उनकी रिवायात की क़िल्लत का कारण यह है कि वह रिवायात हदीस में "अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायात हदीस में" हद दर्जा के सचते थे। फ़रमाते थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से वर्णन करने में यह चीज़ रोक होती है कि शायद अन्य सहाबा के मुक़ाबले में मेरा हाफ़िज़ा ज़्यादा मज़बूत न हो।" कहते हैं कोई बात मैं वर्णन करूँ तो यह रोक होती है कि यह न हो कि दूसरे सहाबा के मुक़ाबले में मेरा हाफ़िज़ा इतना मज़बूत न हो और उनकी बात सही हो। इसलिए मैं रिवायात वर्णन करने में बड़ा सचेत हूँ। फ़रमाया कि "लेकिन मैं गवाही देता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह कहते सुना है कि जो व्यक्ति मेरी तरफ़ वे स्मोब सम्बोधित करेगा जो मैंने नहीं कहा है वह अपना ठिकाना जहन्नुम बना ले। इसी लिए वह (हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु) हदीस की रिवायत में सख़्त एहतियात करते थे।'' "अब्दुर्रहमान बिन हातिब का वर्णन है कि मैंने किसी सहाबी को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा पूरी बात करने वाला नहीं देखा लेकिन वह हदीस वर्णन करते डरते थे।"

(सैरुल सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुलफ़ाए राशिदीन लेखक शाह मुईनुद्दीन अहमद नदवी भाग 1 पृष्ठ 204)

हुमरान बिन अबान कहते हैं कि एक मर्तबा हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने वुज़ू के लिए पानी मंगवाया। कुल्ली की और नाक में पानी डाला और तीन मर्तबा चेहरा धोया और बाज़ुओं को तीन तीन मर्तबा धोया और सिर पर और दोनों पांव के ऊपर वाले हिस्सा पर मस्ह फ़रमाया। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु हंस पड़े। फिर अपने साथियों से कहा। क्या तुम मुझ से हँसने की वजह नहीं पूछोगे? उन्होंने कहा हे अमीर-ऊल-मोमनीन आप रज़ियल्लाहु अन्हु क्यों हँसे थे? फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसी जगह के क़रीब पानी मंगवाया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसी तरह वुज़ू किया जैसा कि मैंने वुज़ू किया है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हस दिए। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा से फ़रमाया क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं किस वजह से हसा हूँ? उन्होंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किस वजह से हँसे हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया इन्सान जब वुज़ू का पानी मंगवाए और अपना चेहरा धोए तो अल्लाह उस के समस्त गुनाह माफ़ फ़र्मा देता है जो चेहरे से होते हैं। फिर जब वो अपने बाज़ू धोता है तब भी ऐसा ही होता है। फिर जब वह अपने सिर का मस्ह करता है तब भी ऐसा ही होता है और जब वह अपने पांव पाक करता है तब भी ऐसा ही होता है।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग पृष्ठ 201 मस्नद उस्मान बिन अफ़्फ़ान, हदीस नंबर 415 अलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई.)

यह रिवायत असल में तो पहली वुज़ू वाली रिवायत के साथ ही वर्णन होनी चाहिए थी। बहरहाल अब वर्णन हो गई।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शादियां और औलाद के सम्बन्ध में जो रिवायात हैं उसके मुताबिक़ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने आठ शादियां कीं। यह सब शादियां इस्लाम क़बूल करने के बाद कीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नियाँ और औलाद के नाम निम्नलिखित हैं। हज़रत रुक़य्या पुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। आप रज़ियल्लाहु अन्हा के गर्भ से आप रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़र्ज़ंद अब्दुल्लाह बिन उस्मान पैदा हुए। हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा पुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की। हज़रत फ़ाख़ता पुत्री ग़ज़वां रज़ियल्लाहु अन्हु। आप हज़रत उत्बा बिन ग़ज़वां रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन थीं। उनके गर्भ से आप रज़ियल्लाहु अन्हु के हाँ बेटा पैदा हुआ जिसका नाम भी अब्दुल्लाह था और उस को अब्दुल्लाह अल्असग़र कहा जाता था। हज़रत उम्मे अम्र पुत्री जुन्दब अज़्दिया। उनके गर्भ से अम्र, ख़ालिद, अबान, उमर और मर्यम का जन्म हुआ। हज़रत फ़ातिमा पुत्री वलीद मख्ज़ूमिया रज़ियल्लाहु अन्हा। उनके गर्भ से वलीद, सईद और उम्मे सईद का जन्म हुआ। हज़रत उम्मुल बनीन पुत्री उयैना बिन हिसन फ़ज़ारिया रज़ियल्लाहु अन्हा। उनके गर्भ से आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पुत्र अब्दुल मालिक का जन्म हुआ। हज़रत रमला पुत्री शेयबिया बिन रबीया रज़ियल्लाहु अन्हा। उनके गर्भ से आयशा, उम्मे अबान और उम्मे अम्र का जन्म हुआ। हज़रत नायला पुत्री फ़्राफ़यसा बिन अहवयसा पहले ईसाई थीं लेकिन विदाई से पूर्व इस्लाम क़बूल कर लिया था और अच्छी मुस्लमान साबित हुईं। उनसे आप रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी मर्यम पैदा हुईं। कहा जाता है कि एक बेटा अंबसा भी पैदा हुआ था। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की जब शहादत हुई तो उस वक़्त एक रिवायत के अनुसार आप की ये चार पत्नियाँ आप के पास थीं। हज़रत रमलहर ज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत नायला रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मुल बनीन और हज़रत फ़ाख़ता रज़ियल्लाहु अन्हा जबकि एक और रिवायत के अनुसार घेराव के दिनों में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उम्मुल बनीन को तलाक़ दे दी थी।

(तारीख़ तिब्री भाग 5 पृष्ठ 200 ज़कर औलादुहू व अज़वाजुहू सुम्मा दख़लत सनत ख़मसीन व सलासीन ,दारुल फ़िकर बेरूत 1998 ई.) (सीरत अमीरुल मोमिनीन उस्मान बिन अफ़्फ़ान, सलाबी से पृष्ठ 17 17 अल्फसलुल अव्वल अल्मबहस अव्वल इस्मुहू व नसबहू व कुन्नियतहू दारुल मआरफ बैरूत 2006 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत नूर की तफ़सीर करते हुए वर्णन फ़रमाते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि एक नूर मार्फ़त का होता है जिस से भले बुरे का अंतर किया जाता है। वह नूर उन घरों में होता है जिन घरों में सुबह शाम अल्लाह तआला का वर्णन होता है। वहां जो लोग रहते हैं वे ताजिर हैं। उनके घर छोटे हैं परन्तु किसी दिन अल्लाह उनके घरों को बड़ा बना देगा। इस लिए इस क़ुरआन शरीफ़ का जमा करने वाला हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु है। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु उस को प्रकाशित करने वाले हैं। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु जिनसे सच्चे रुहानी उलूम दुनिया में पहुंचे। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने भी स्वयं हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु सीधे क़ुरआन के कुछ मआरिफ़ सीखे हैं। फिर हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने इन रुकुओं में यह भी बता दिया है कि अंसार में ख़िलाफ़त न होगी बल्कि मुहाजिरीन में। फिर यह बताया कि उनका मुक़ाबला मुस्लमान भी करेंगे और कुफ़्फ़ार भी। इस लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की मुख़ालिफ़त इसी तरह हुई। कुछ लोग ख़िलाफ़त के क़ायल न थे। अल्लाह तआला ने दोनों की मिसाल दी कि एक वे जो कलर के बुख़ारात को पानी समझे। दूसरे वे जो शरीयत के समुंद्र में भी हो कर मुक़ाबला करेंगे। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अंजाम यह कि पशु पक्षी उनका गोश्त खाएँगे। ख़ुलफ़ाए राशिदीन में से हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए बहुत मुश्किलात थीं। लश्कर हज़रत उसामा के साथ

रवाना कर दिया गया था। उधर अरब में बग़ावत फैल गई। मक्का में लोग बग़ावत के तैयार थे कि वहां एक अक़्लमंद इन्सान पहुंच गया, उसने मक्का वालों को कहा कि तुम ईमान लाने में सबसे पीछे थे अब मुर्तद होने में सबसे पहले हो। इस पर वे रुक गए। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم مُّعْرِضُونَ (नूर: 49) में जिस गिरोह का वर्णन है वे न हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु के युग में, ना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के युग में, न हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और अली रज़ियल्लाहु अन्हु के युग में उद्देश्य कभी भी सफ़ल और कामयाब नहीं हुआ। ये गिरोह कभी कामयाब नहीं हुआ। परन्तु दूसरा फ़रीक़ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا (अल्बक़रा 286) कहने वाला है। सफ़ल और कामयाब रहा। हमेशा कामयाब रहा। इस लिए क़ुरआन मजीद ने फ़रमाया है وَ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (अल्बक़रा 6)

(उद्धरित हक़ायकुल फुर्क़ान भाग 3 पृष्ठ 223)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं कि "मैं तो यह जानता हूँ कि कोई व्यक्ति मोमिन और मुस्लमान नहीं बन सकता जब तक अबू बकर, उमर, उस्मान, अली रिज़वानुल्ला अलैहिम अजमाईन का सा रूप धारण न करे ले। वे दुनिया से मुहब्बत नहीं करते थे बल्कि उन्होंने अपनी ज़िंदगियां ख़ुदा तआला की राह में वक़्फ़ की हुई थीं।"

(लैक्चर लुधयाना, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 294)

फिर आप फ़रमाते हैं "यह अक़ीदा ज़रूरी है कि हज़रत सिद्दीक़ ए अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत फ़ारूक़ उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ू नूरेयन (दो नूरो वाले) रज़ियल्लाहु अन्हु अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और "हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु सब वाक़ई तौर पर दीन में सच्चे थे। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु जो इस्लाम के आदमे सानी हैं और ऐसा ही हज़रत उमर फ़ारूक़ और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हा यदि दीन में सच्चे अमीन न होते तो आज हमारे लिए मुश्किल था जो क़ुरआन शरीफ़ की किसी एक आयत को भी ख़ुदा की ओर से होना बता सकते।''(मक्तूबाते अहमद भाग 2 पृष्ठ 151पत्र नंबर 2 पत्र हज़रत ख़ान साहब मुहम्मद अली ख़ान साहब के नाम प्रकाशन रब्वाह)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "ख़ुदा की क़सम ख़ुदा ने दोनों शेख़ों (अबू बक्र[रज़ि.] तथा उमर[रज़ि.]) को और तीसरे जो ज़ुन्नूरैन हैं प्रत्येक को इस्लाम के दरवाज़े तथा ख़ैरुलअनाम (मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सेना का हरावल दस्ता बनाया है। तो जो व्यक्ति उनकी श्रेष्ठता से इन्कार करता है और उनके ठोस तर्क को तुच्छ समझता है और उनके साथ आदर पूर्वक व्यवहार नहीं करता बल्कि उनका अनादर करता है तथा उन्हें बुरा-भला कहने पर तत्पर रहता और गालियां देता है।

मुझे उसके बुरे अंजाम और ईमान के समाप्त हो जाने का भय है और जिन्होंने उनको दुख दिया उनकी निन्दा की और झूठे आरोप लगाए तो दिल की कठोरता और कृपालु (रहमान) ख़ुदा का प्रकोप उन का अंजाम हुआ। मेरा अनेकों बार का अनुभव है और मैं इस को स्पष्ट तौर पर अभिव्यक्त भी कर चुका हूं कि इन सादात से शत्रुता और द्वेष रखना बरकतें प्रकट करने वाले ख़ुदा से सर्वाधिक संबंध विच्छेद करने का कारण है और जिसने भी इन से शत्रुता की तो ऐसे व्यक्ति पर रहमत (दया) और हमदर्दी के समस्त मार्ग बन्द कर दिए जाते हैं और उसके लिए ज्ञान और इर्फ़ान के दरवाज़े खोले नहीं जाते और ख़ुदा उन्हें संसार के आनन्दों तथा कामवासना संबंधी इच्छाओं के गड्ढों में गिरा देता है और उसे (अपनी चौखट से) दूर रहने वाला तथा वंचित कर देता है।"

(सिर्रुलख़िलाफ़त, उर्दू अनुवाद प्रकाशन नज़ारत इशाअत रब्वाह पृष्ठ 28-29)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद जो कुछ इस्लाम का बना है वे अस्हाबे सलसा से ही बना है।'' (मलफ़ूज़ात भाग6 पृष्ठ 414) अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अहले तशीअ का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "हम तुम्हारी गालियों का शिकवा क्या करें क्योंकि तुम समस्त सहाबा को गालियां देते हो परन्तु कुछ को छोड़ कर तथा तुम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बीवीयों उम्माहातुलल-मोमनीन को लानत से याद करते हो और समझते हो कि ख़ुदा की पुस्तक में कुछ ज़्यादा और कम किया गया है और कहते हो कि वे ब्याज़ ए उस्मान है और ख़ुदा की तरफ़ से नहीं है तुमने इस्लाम को ऐसा समझ लिया जैसा कि एक ब्याबान जिसकी ज़मीन ख़ुशक और ज़राअत से ख़ाली है अर्थात ख़ुदा के मुक़र्रिबों से ख़ाली है।" फिर फ़रमाया "अत: कौन सी इज़्ज़त तुम्हारे हाथों से बाक़ी रही हे सीमा पार करने वालो!?"

(हज अल्लाह,रुहानी ख़ज़ाइन भाग 12 पृष्ठ 184-185)

फिर आप फ़रमाते हैं "मुझे मेरे रब्ब की ओर से ख़िलाफ़त के बारे में अन्वेषण की दृष्टि से शिक्षा दी गयी है और मैं अन्वेषकों की तरह उस वास्तविकता के मर्म तक पहुंच गया तथा मेरे रब्ब ने मुझ पर यह प्रकट किया कि सिद्दीक़ और फ़ारूक़ और उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हुम) सदाचारी और मोमिन थे तथा उन लोगों में से थे जिन्हें अल्लाह ने चुन लिया और जो कृपालु ख़ुदा की अनुकंपाओं से विशिष्ट किए गए और अधिकांश मारिफ़त रखने वालों ने उनकी ख़ूबियों की गवाही दी।

उन्होंने बुज़ुर्ग एवं सर्वश्रेष्ठ ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए देश-त्याग किया प्रत्येक युद्ध की भट्टी में प्रविष्ट हुए और गर्मी के मौसम की दोपहर की गर्मी तथा सर्दियों की रात की ठंडक की परवाह न की बल्कि नवोदित युवकों की तरह धर्म के मार्गो पर अपनी चाल में लीन हो गए और अपनों तथा ग़ैरों की ओर न झुके तथा समस्त लोकों के प्रतिपालक ख़ुदा के लिए सब को अलविदा कह दिया। उन के कर्मों में सुगंध तथा उनके कार्यों में ख़ुशबू है और यह सब कुछ उनके पदों के उद्दानों तथा उनकी नेकियों की पुष्प वाटिकाओं की ओर मार्ग-दर्शन करता है और उनकी सवेरे की मृदुल-मंद समीर अपने सुगंधित झोकों से उन के रहस्यों का पता देती है और उनके प्रकाश अपनी पूर्ण आभाओं से हम पर प्रकट होते हैं। तो तुम उनके पदों की चमक-दमक का उनकी सुगंध से पता लगाओ और जल्दबाज़ी करते हुए कुधारणाओं का अनुकरण मत करो तथा कुछ रिवायतों का सहारा न लो क्योंकि उनमें बहुत ज़हर और बड़ी अतिशयोक्ति है तथा वे विश्वसनीय नहीं होतीं। उनमें से बहुत सारी रिवायतें उथल-पुथल करने वाली आंधी और वर्षा का धोखा देने वाली बिजली के समान हैं। अत: अल्लाह से डरो और उन (रिवायतों) का अनुकरण करने वालों में से न बन।

(सिर्रुलख़िलाफ़त, उर्दू अनुवाद प्रकाशन नज़ारत इशाअत पृष्ठ 25-26)

इसके साथ ही हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन ख़त्म होता है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन इन शा अल्लाह आगे शुरू होगा।

आज भी एक तो यह है कि 'अल-इस्लाम' ने क़ुरआन सर्च की नई वेब साइट का पहला वर्ज़न (version) तैयार किया है। Holy quran.io यह वेबसाइट अल-इस्लाम से अलैहदा देखा जा सकता है। किसी भी सूरत, आयत, शब्द या मज़मून को अरबी अंग्रेज़ी या उर्दू में एक नई सर्च इंजन के द्वारा तलाश किया जा सकता है और सर्च नतायज को अहमदी और ग़ैर अहमदी अनुवाद के साथ भी देखा जा सकता है। हर आयत के साथ उस की तफ़सीर, मज़ामीन और सम्बंधित आयात देखी जा सकती हैं। मज़ीद मवाद पर भी काम जारी है और इन शा अल्लाह उस का अगला हिस्सा जलसा सालाना यू के के 2021 ई. तक तैयार किया जाएगा। इस के अतिरिक्त अल-इस्लाम वेब साइट पर क़ुरआन पढ़ने सुनने और सर्च की वेबसाइट readquran.app का भी नया सुंदर वर्ज़न तैयार कर लिया गया है जिस में अंग्रेज़ी तफ़ासीर के साथ तफ़सीर ए सग़ीर के नोटिस अंग्रेज़ी शब्द शब्द के साथ अनुवाद, मज़ामीन का इंडैक्स और बहुत सी लाभदायक बढ़ोतरियाँ जो प्रतिदिन की तिलावत से क़ुरआन में मुफ़ीद होंगे शामिल किए गए हैं। अल्लाह तआला से दुआ है कि यह प्राजैक्ट क़ुरआन ए करीम की ख़ूबसूरत शिक्षा को दुनिया में फैलाने का कारण बने और जमात के लोग भी इन से भरपूर फ़ायदा हासिल करने वाले हों।

इसके साथ ही में पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ की दरख़ास्त करता हूँ। अल्लाह तआला उनके भी हालात बदले। उनके लिए आसानीयां पैदा करे। इसी तरह अल-जज़ायर के अहमदियों के लिए भी। अल्लाह तआला उनको भी सबात ए क़दम अता करे और उनके हालात में तबदीली पैदा करे।

अब मैं कुछ वफ़ात पाने वालों का वर्णन करूँगा जिनके जनाज़े भी पढ़ाऊंगा। अब जो बहुत सारी दरख़ास्तें आती हैं तो मुश्किल है कि हर एक का यहां वर्णन किया जाए और जनाज़ा पढ़ाया जाए बहरहाल कुछ का मैं वर्णन कर रहा हूँ। बाक़ी मैंने इनमें शामिल कर लिए हैं। उनका नाम लिए बग़ैर ही वे शामिल हैं। अल्लाह तआला इन सबसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। बहरहाल जिनका वर्णन करना है वे मैं अब पढ़ देता हूँ। उनमें आदरणीय मुहम्मद सादिक़ साहिब दुर्गा रामपूरी हैं। यह मुहम्मद सादिक़ साहिब दुर्गा रामपूरी ढाका बंगला देश हैं। 14 नवंबर 2020 ई. को 75 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

मरहूम ने दीगर ओहदों के अतिरिक्त लम्बे समय तक नैशनल सैक्रेटरी वक़्फ़ नौ के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। वाकफ़ीन नौ और माता पिता के साथ क्लासिज़ के एहतिमाम के लिए दूर दराज़ की जमातों का बाक़ायदा दौरा किया करते थे और नियमित रूप से यह मस्जिद जाया करते थे जब तक उन्हें बीमारी ने मजबूर

नहीं किया। मरहूम मूसी थे और उनके पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त तीन बेटे और एक बेटी शामिल हैं।

अगली एक महिला हैं मुख़्तारां बी-बी साहिबा पत्नी रशीद अहमद उठवाल साहिब दारुल यमन रब्वाह। यह नईम बाजवा साहिब प्रिंसिपल जामिआतुल मुबश्शिरीन बुर्कीना फासो की सास हैं। 16 जनवरी को उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। लजना दारुल यमन ग़र्बी की मजलिस ए आमला में मजमूई तौर पर सतराह वर्ष उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। विभिन्न देशों में उनको माली क़ुर्बानीयों की तौफ़ीक़ मिली और लाखों में अल्लाह तआला ने उनको माली क़ुर्बानी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। वफ़ात से चंद घंटे पहले भी उनकी आँख खुली तो उन्होंने कहा कि मेरी चूड़ियां कहाँ हैं? और तुरन्त अपने बेटे को कहा कि यह चूड़ियां बेच के तो सदर साहिब को दे आओ जो तक़रीबन साढ़े तीन लाख रुपय की थीं। वह एम.टी.ए के लिए क़ुर्बान कर दें कि डिश लगवा दें।

फिर उनके दो बेटे 1995 ई. में जर्मनी में कार के हादिसे में वफ़ात पा गए थे। बड़े हौसले से सदमा बर्दाश्त किया और कभी इस हादिसे का वर्णन नहीं किया न शिकवा किया। इस सदमे को अल्लाह तआला की इच्छा, ख़ुदा की इच्छा सोच कर बर्दाश्त किया। तब्लीग़ का बहुत शौक़ था और जोश था। रब्वाह के इर्द-गिर्द के गावं में तब्लीग़ के लिए दूर-दूर तक निकल जाती थीं। क़ुरआन मजीद से इशक़ था। स्वयं क़ुरआन करीम की तिलावत नियमित रूप से करने के अतिरिक्त मुहल्ले के बच्चों को क़ुरआन मजीद और यससर्नल क़ुरआन पढ़ाया। मरहूमा मूसिया भी थीं। पति के अतिरिक्त एक बेटा और चार बेटियां शामिल हैं। तीन बेटियां लंदन में हैं एक बुर्कीना फासो में हैं। यहां भी जो बेटियां हैं वह जमात का काम कर रही हैं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा मंज़ूर अहमद शाद साहिब का है जो 17 जनवरी को 82 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। ख़ानदान में अहमदियत आप के पिता हज़रत मियां अब्दुल करीम साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा से 1903 ई. में आई थी जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम करम दीन के मुक़द्दमा के सिलसिला में जेहलम तशरीफ़ ले गए थे। शाद साहिब 1956 ई. में कराची स्थांतरित हुए। फिर वहां बतौर क़ायद ज़िला कराची ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और उन्होंने वहां ख़ुद्दामुल अहमदिया में बड़ा अच्छा काम किया। फिर सदर जमात ड्रिग रोड कॉलोनी और नायब अमीर कराची के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। 1984 ई. में जिस वफ़्द ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला का सख्खर में स्वागत किया था आप उस वफ़्द में शामिल थे और उनकी रवानगी तक एयरपोर्ट पर ही रहे। 2010 ई. में लंदन स्थांतरित हुए। यहां बैतुल फ़तूह होमेयोपैथिक डिसपेंसरी में भी बाक़ायदा वक़्त दिया करते थे। वफ़ात के वक़्त आप सैक्रेटरी तर्बीयत और सैक्रेटरी तर्बीयत नोमुबाईन जमात नवरबरी (norbury)ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे। मरहूम मूसी थे। उनके दो पोते और एक नवासा मुरब्बी हैं और यहीं यू.के में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा हमीदा अख़्तर साहिबा पत्नी अब्दुर्रहमान सलीम साहिब यू. एस.ए. का है जो 19 जनवरी को 92 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला ने मरहूमा को लंबा अरसा तक़रीबन पच्चास वर्ष लजना ईमाइल्लाह कराची और रावलपिंडी में जनरल सैक्रेटरी के तौर पर भी, लजना के सदर के तौर पर भी, निगरान क़ियादत के तौर पर भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। ख़िलाफ़त की आशिक़ थीं। बच्चों को भी ख़िलाफ़त से इख़्लास के साथ जुड़े रहने की तलक़ीन किया करती थीं। समस्त आयु नमाज़ों की पाबंद और तहज्जुद गुज़ार रहीं। क़ुरआन को पढ़ने और पढ़ाने का ख़ास एहतिमाम करती थीं और अपने बच्चों और उनके बच्चों को भी क़ुरआन करीम पढ़ाया। उनको उमरा की सआदत भी मिली। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में पाँच बेटे और दो बेटियां हैं। आपकी औलाद में से भी कई ख़ादिम ए दीन हैं और जमात की विभिन्न हैसियत से ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। डाक्टर अबदुस्सलाम साहिब हैं, डाक्टर ख़लील मलिक साहिब हैं। अच्छी ख़िदमत कर रहे हैं। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीय नासिर पीटर लुतसीन (nasir peter lutzin) साहिब का है। जर्मन अहमदी हैं। जो 20 जनवरी को वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनकी बेटी वर्णन करती हैं कि 1983 ई. के एक रोज़ मेरे माता पिता हनोवर (hanover)शहर के मर्कज़ी बाज़ार से गुज़र रहे थे कि उनकी नज़र एक स्टॉल पर पड़ी जो महिज़ एक मेज़ पर आधारित था और जिस पर कुछ कुतुब परिचय की पड़ी थीं और इसके पीछे एक दो ग़ैरमुल्की नौजवान खड़े थे। उनसे आपका परिचय हुआ तो पता चला कि ये इस्लाम की नुमाइंदे जमात अहमदिया का तब्लीग़ी स्टॉल है। इस लिए इन नौजवानों से सवालात भी किए और लिटरेचर भी साथ ले लिया। लिटरेचर पढ़ने के बाद उन्होंने दुबारा उन लोगों से संपर्क कर के मुलाक़ात की। इन तीनों अहमदियों ने उन्हें अपने पास खाने पर बुलाया। रमज़ान का महीना था तो कहती हैं कि इफ़तारी पर मेरे माता पिता उनके घर गए। उन लोगों ने फ़र्श पर पुराने अख़बार बिछा कर खाना लगाया हुआ था। कोई जगह नहीं थी बैठने की। नीचे ज़मीन पर क़ालीन पर बैठ कर साथ अख़बार बिछाए और उस पर खाना लगाया हुआ था। खाना मेरे माता पिता को बड़ा पसंद आया लेकिन उस से ज़्यादा उन लोगों की सादगी और मेहमान-नवाज़ी उनको महसूस हुई। उस का आनन्द ज़्यादा आया। फिर कहती हैं खाने के बाद भी बात चीत हुई। फिर घर आना जाना शुरू हुआ और कुछ महीनों तक अध्यन और तहक़ीक़ करने बाद 1984 ई. में कहती हैं मेरे माता पिता बैअत कर के जमात अहमदिया मुस्लिमा में शामिल हो गए। यह अवसर ईद का था और कहती हैं स्थानी दोस्तों के साथ आदरणीय नासिर साहिब हैमबर्ग गए और बैअत करने की सआदत पाई। एक जलसा सालाना पर उनको तक़रीर करने का भी अवसर मिला। कहती हैं कि मेरी माता की मज़हब से ख़ास दिलचस्पी थी और सच्चे मज़हब की तलाश के शौक़ ने उनको अहमदियत की ओर आकर्षित किया और फिर उनका ज़िंदा ख़ुदा से ज़िंदा सम्बन्ध भी क़ायम हुआ और दुआओं की क़बूलीयत का निशान कई मर्तबा देखा। और अल्लाह तआला भी कैसे निशान उनको दिखाता है। कहती हैं कि मेरी माता एक आँख से माज़ूर थीं। 1986 ई. में जलसा सालाना यू.के. में शामिल हुईं तो अचानक उनकी नज़र किसी हद तक लौट आई। पहले तो आँख बिल्कुल बंद थी परन्तु फिर उसी आँख से थोड़ा-थोड़ा नज़र आना शुरू हो गया। अब कहती हैं कि जिसकी एक आँख बिल्कुल ख़त्म हो जाए उस के लिए यह बात चमत्कार से कम नहीं और यह चमत्कार ग्यारह वर्ष नज़र से वंचित रहने के बाद हुआ जिसका वह कहती हैं कि ख़ालिस दुआ की वजह से और जलसा में आ के दुआएं करने की वजह से यह बरकत मुझे मिली। फिर लंदन में एक जर्मन अहमदी ख़दीजा साहिबा के घर ठहरा करती थीं। कहती हैं कि एक दिन मेरे माता पिता उनके घर से सैर की ग़रज़ से बाहर निकले तो कुछ दूर चले गए। वापिस आने के लिए रस्ता भूल गए। अंधेरा बढ़ने के साथ-साथ उनको परेशानी बढ़ रही थी। एक ऐसी सड़क पर खड़े थे जहां ट्रैफ़िक बहुत ज़्यादा थी और कुछ पता न था कि कहाँ खड़े हैं। जब अंधेरा अधिक गेहरा हो गया और रास्ता भी गुम गया तो कहती हैं मेरी माता ने कहा आओ दुआ करते हैं। अभी दुआ से फ़ारिग़ हुए ही थे कि देखा कि आदरणीया ख़दीजा साहिबा के दामाद अपनी गाड़ी के साथ उनके सामने खड़े कह रहे थे कि आएं गाड़ी में बैठें। मैं आपको घर ले जाऊं। क़बूलीयत दुआ के इस नज़्ज़ारे ने उनके ईमान को मज़ीद ताज़गी और शक्ति प्रदान की।

लईक मुनीर साहिब मुरब्बी जर्मनी लिखते हैं कि लुतसीन साहिब का सारा ख़ानदान अहमदी था। उस वक़्त हम कहा करते थे कि यह अकेली जर्मन अहमदी फ़ैमिली है। आप बहुत इख़्लास रखने वाले कम बोलने वाले और शरीफ़ उल-नफ़्स थे। माली क़ुर्बानी में भी लुतसीन साहिब आगे आगे रहते थे। तब्लीग़ी प्रोग्रामों में लैक्चर देते थे। उनके सामने जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम लिया जाता तो उनकी आँखों में नमी आ जाती। एक तब्लीग़ी मीटिंग में मरहूम ने इस्लाम की शिक्षा इस क़दर ख़ूबसूरत अंदाज़ में प्रस्तुत की कि एक सत्तर साला जर्मन मेरे पास आए और कहने लगे कि मुझे इस्लाम के बारे में जैसी मालूमात आज मिली हैं आज से पहले कभी नहीं मिलीं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलादों को भी अहमदियत पर क़ायम रखे।

अगला जनाज़ा आदरणीया रज़ीया तनवीर साहिबा कैनेडा का है जो ख़लील अहमद तनवीर साहिब मुरब्बी सिलसिला, वायस प्रिंसिपल जामिआ रब्वाह की पत्नी थीं। 27 जनवरी को 58 वर्ष की आयु में कैनेडा में वफ़ात पा गईं । इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उन्हें कैंसर की बीमारी थी। मरहूमा को बचपन से ही देनी कामों में बहुत शौक़ था जो कि वफ़ात तक क़ायम रहा। 22 वर्ष दफ़्तर लजना ईमाइल्लाह पाकिस्तान और दफ़्तर माहनामा "मिसबाह" में विभिन्न विभागों में बतौर इमप्रेस्ट, एकाऊंटैंट उनको ख़िदमत का अवसर मिला और बीमारी तक ख़िदमत का यह सिलसिला जारी रहा। हज़रत छोटी आपा साहिबा के साथ उनको काफ़ी काम की तौफ़ीक़ मिली और बहुत कुछ सीखने को मिला और उनकी दुआएं लेने की उनको तौफ़ीक़ मिली। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा मियां मंज़ूर अहमद ग़ालिब साहिब इब्ने मियां शेर मुहम्मद साहिब आफ़ दूदा ज़िला सरगोधा है। 7 फरवरी को वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके बड़े भाई को 1955 ई. में अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ मिली थी। फिर बड़े भाई के साथ यह रब्वाह जाते रहे और वहां उन्होंने भी बैअत कर ली। उनके बेटे बशीर अहमद साहिब बेलजियम कहते हैं कि आप ख़िलाफ़त के फ़िदाई आशिक़ थे और ख़िलाफ़त की इताअत में कोई व्याख्या नहीं करते थे बल्कि उसी प्रकार अमल करना सआदत समझते थे। और मैं ज़ाती तौर पर भी उनका जानकार था। यह वास्तव में बहुत इख़लास-ओ-वफ़ा से जमात की ख़िदमत करने वाले और ख़िलाफ़त की इताअत करने वाले भी थे। दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखने वाले, ख़ादिम दीन, मेहमान नवाज़, इंतिहाई दरवेश स्वभाव के, गरीबों का ख्याल रखने वालेर, मिलनसार, निहायत शफ़ीक़ और हर दिलअज़ीज़ शख़्सियत के मालिक थे। अल्लाह के फ़ज़ल से उनको ख़ुद्दामुल अहमदिया ज़िला में भी, फिर अन्सारुल्लाह ज़िला, फिर सरगोधा में जमात में ज़िला की सतह पर सैक्रेटरी माल और सैक्रेटरी वक़्फ़ ए नौ, सैक्रेटरी तहरीक जदीद ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और बड़े अहसन रंग में उन्होंने अपनी ख़िदमात सरअंजाम दी। उनके एक पोते सफ़ीर अहमद मुरब्बी सिलसिला हैं आजकल यहां दफ़्तर पी.ऐस. में काम कर रहे हैं। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीया बुशरा हमीद अनवर अदन साहिबा पत्नी हमीद अनवर साहिब अदन यमन का है जो एम.टी.ए. में हमारे वालंटीयर कारकुन आदरणीय मुहम्मद अहमद अनवर साहिब हैं उनकी माता थीं और मुनीर अहमद ओदा साहिब डायरेक्टर प्रोडक्शन एम.टी.ए. की सास थीं। 14 फरवरी को उनकी 69 वर्ष की आयु में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा हज़रत हाजी मुहम्मद दीन साहिब तहालवी और हज़रत हुसैन बी-बी साहिबा की पोती थीं। एम.टी.ए. में भी उनको काम करने की तौफ़ीक़ मिली। लका माअल अरब प्रोग्राम के समस्त डैटा को ट्रांसफ़र करने के सिलसिला में नियमित रूप से लंबा अरसा काम करती रहें और साथ अल् अरबिया में भी ख़िदमात अंजाम देती रहीं। हर किस्म की जमाती ख़िदमात बजा लाने में ख़ुशी महसूस करती थीं। बड़ी साबरा शाकरा महिला थीं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीया नूरुल सबाह ज़फ़र साहिबा पत्नी मुहम्मद अफ़ज़ल ज़फ़र साहिब मुरब्बी सिलसिला एलडोरो रेट कीनीया का है। 25 मार्च को उनकी 62 वर्ष की आयु में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। आप मौलाना मुहम्मद सईद अंसारी साहिब मरहूम मुरब्बी सिलसिला की सबसे छोटी बेटी थीं। नसीम बाजवा साहिब मुरब्बी सिलसिला बर्तानिया की छोटी ख़्वाहर निसबती थीं। उनके मियां मुहम्मद अफ़ज़ल साहिब लिखते हैं अल्लाह के फ़ज़ल से पाचों नमाज़ों की पाबंद, तहज्जुद गुज़ार और नियमित रूप से हर-रोज़ क़ुरआन करीम की तिलावत करने वाली थीं। दुआओं पर हद दर्जा यक़ीन था। स्वयं भी हर वक़्त दुआओं में लगी रहतीं और बच्चों को भी हमेशा दुआओं की तलक़ीन करतीं और नियमित रूप से फिर ख़लीफ़ वक़्त के ख़ुत्बात भी सुन्नतें और बाद में बच्चों की तर्बीयत के लिए स्वयं भी दुबारा विशेष चुने हुए प्वाईंटस उन्हें बतातीं। हदीस, तारीख़ और कुतुब सिलसिला से ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात अत्याधिकता से बच्चों को सुनातीऔर हमेशा ख़िदमत दीन और ख़िलाफ़त से वाबस्ता रहने की तलक़ीन करतीं। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसिया थीं। चंदे की अदायगी में हद दर्जा बाक़ायदा थीं। हर माली तहरीक में हिस्सा लेती थीं। मेहमान-नवाज़ी में अल्लाह तआला ने आपको बहुत ज़्यादा वुसअत कलबी अता फ़रमाई हुई थी। यह कहते हैं मरहूमा से मेरी इक्कीस वर्ष का साथ था और इस में निहायत हमदर्दाना और काबिल ए तारीफ़ रहीं। यह रिफ़ाक़त काबिल ए तारीफ़ रही है। ज़फ़र साहिब की पहली पत्नी फिजी में जब यह मुबल्लिग़ थे तो वहां एक हादिसे में तीन बेटीयों और एक बेटे चार बच्चों समेत शहीद हो गई थीं। ज़फ़र साहिब की उनसे यह दूसरी शादी थी और जो पहली बीवी से दो बेटियां थीं उनको भी उन्होंने माँ बन के प्यार दिया जिस का स्वयं बच्चीयों ने इज़हार किया कि हमें कभी एहसास नहीं होने दिया कि हमारी माँ नहीं है। उनकी हमेशा अच्छी तर्बीयत भी की और पढ़ाया लिखाया भी और न सिर्फ यह कि बच्चीयों से अच्छा सुलूक किया बल्कि ज़फ़र साहिब कहते हैं मेरे साबिक़ा ससुराल से भी उतना सुलूक किया कि वे भी आपके हुस्न ए अख़लाक़ के आशिक हो गए। उनकी एक बेटी कहती हैं कि हमारी ज़िंदगी में जब यह आई हैं तो एक रोशनी, एक सहारा और एक शफ़ीक़ माँ बन कर आईं और हमें वह मुहब्बत और प्यार दिया कि हमें कभी अपनी हक़ीक़ी माता की कमी महसूस नहीं हुई और उनकी अपनी भी एक बेटी थीं लेकिन तीनों बच्चीयों में कभी कोई फ़र्क़ नहीं किया। बेनफ़्स और प्रेम करने वाली महिला थीं। ख़ुदा तआला की ज़ात पर तवक्कुल, ख़िलाफ़त अहमदिया से वाबस्तगी और मज़हबी शिक्षा की पाबंदी की हमें तलक़ीन करतीं। हमेशा रिश्तों की अज़मत और सिला रहमी का दरस दिया करती थीं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा सुलतान अली रिहान साहिब का है जो मुहम्मद अहमद नईम साहिब मुरब्बी सिलसिला मर्कज़ी अरबी डैसक यू. के. के पिता हैं और जो 26 मार्च को 83 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मुहम्मद अहमद साहिब लिखते हैं कि हमारे ताया जान ने स्वयं तहक़ीक़ कर के 1958 ई. में बैअत की। इसके बाद मेरे अब्बा जान को तब्लीग़ की और जलसा पर रब्वाह भिजवाया और एक दो पुस्तकें पढ़ने के बाद उनके पिता ने भी अल्लाह के फ़ज़ल से बैअत कर ली। फिर कहते हैं कि बैअत के बाद दोनों भाईयों की बड़ी मुख़ालिफ़त हुई। क़तल की कोशिशें भी हुईं लेकिन अल्लाह तआला ने सुरक्षित रखा। मौलवी लोग गांव आकर कहा करते थे कि तुम्हारे से दो लड़के क़तल नहीं होते लेकिन बहरहाल अल्लाह तआला अपनी हिफ़ाज़त फ़रमाता रहा। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने ग़ैर अहमदी रिश्तेदारों से और गांव वालों से आख़िर तक सम्बन्ध निभाया। उनकी दुश्मनी के बावजूद उनसे हुस्नई.सुलूक करते रहे। उनके दो बेटे और छ: बेटियां हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। मुहम्मद अहमद नईम साहिब अपने पिता साहिब के जनाज़े पर नहीं जा सके।

फिर अगला जनाज़ा मौलवी ग़ुलाम क़ादिर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला वाकिफ ए ज़िंदगी आफ़ कालाबन ज़िला राजौरी सूबा जम्मू कश्मीर का है जो 26 मार्च को छप्पन वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मौलवी ग़ुलाम क़ादिर साहिब मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत उनके दादा आदरणीय बहादुर अली साहिब के द्वारा आई थी। इस ख़ानदान के तेराह लोग बफ़ज़्ला तआला इस वक़्त जमात की ख़िदमत में व्यस्त हैं। बतौर मुबल्लिग़ चौंतीस वर्ष छ: माह उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। मरहूम का जहां भी तक़र्रुर हुआ बड़ी मेहनत के साथ और पुरे दिल और लगन से शिक्षा-ओ-तर्बीयत की ज़िम्मेदारी आख़िर वक़्त तक निभाते रहे। तब्लीग़ का अच्छा मलिका रखते थे। मैदान तब्लीग़ में प्रस्तुत आने वाली परेशानीयों और मुख़ालफ़तों का डट कर मुक़ाबला करने वाले थे। निहायत साबिर शाकिर, थोड़े में सब्र करने वाले और निडर मुबल्लिग़ थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त तीन बेटे और दो बेटियां शामिल हैं। एक बेटा बशीरुद्दीन क़ादिर जामिआ अहमदिया क़ादियान के आख़िरी क्लास में ज़ेर ए ताअलीम है। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा महमूदा बेगम साहिबा पत्नी मुहम्मद सादिक़ साहिब आरिफ़ दरवेश क़ादियान का है जो 1 अप्रैल को 85 वर्ष की आयु में दिल की धड़कन बंद होने की वजह से वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूमा हज़रत क़ाज़ी अशर्फ़ अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम स्थान अलीपुर खेड़ अज़्ला मैनपूरी सूबा यू.पी. की पोती और क़ाज़ी शाद बख़्त अब्बासी साहिब मरहूम की बेटी थीं। उनकी शादी मुहम्मद सादिक़ साहिब आरिफ़ दरवेश मरहूम से हुई थी। मरहूमा ने दरवेशी के समय में ख़ावंद के साथ निहायत सब्र और शुक्र से गुज़ारा। यदि फ़ाक़ों की नौबत भी आई तो हमेशा सब्र का उदाहरण प्रस्तुत किया और कभी किसी के सामने तंगदस्ती का इज़्हार नहीं किया। नमाज़ों की पाबंद बल्कि मौत के समय में भी नमाज़ों के लिए बड़ी बेचैन होती थीं। तिलावत क़ुरआन ए करीम का भी बड़ा एहतिमाम क्या करती थीं। चंदों में बड़ी बाक़ायदा थीं। ख़िलाफ़त से इंतिहाई सम्बन्ध रखने वाली थीं। बच्चों को भी इस हवाले से तलक़ीन किया करती थीं। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में तीन बेटे और दो बेटियां शामिल हैं। अल्लाह तआला मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा ख़ालिद सादुल्लाह अल्मसरी साहिब अरदन का है जो पिछले दिनों 60 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह अपने ख़ानदान में पहले अहमदी थे। बहुत मुख़लिस, नमाज़ों के पाबंद, चंदों में बाक़ायदा और निज़ाम जमात की पाबंदी करने वाले थे। निहायत ख़ुशख़ुलक़, मेहमान नवाज़ और मिलनसार थे। बहुत ठंडी तबीयत वाले और बहुत कम बोलने वाले थे। उन के लिए ख़लीफ़ ए वक़्त की बात कौल ए फ़सल का हुक्म रखती थी। एम.टी.ए में विशेषता ख़ुत्बा जुमा नियमित रूप से देखते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीय मुहम्मद मुनीर साहिब दारुल फ़ज़ल रब्वाह का है जो 1 अप्रैल को 73 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। 1972 ई. में उन्होंने हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला के हाथ पर बैअत की थी। आपका बाक़ी ख़ानदान अहमदी नहीं था। इस वजह से उन्होंने कई बार आप पर टार्चर (torture) भी किया कि आप अहमदियत छोड़ दें बल्कि 2003 ई. में आपको यह भी ऑफ़र की गई कि यदि आप अहमदियत छोड़ दें तो हम आप को इतना देंगे कि आपके बच्चों को भी कमाना नहीं पड़ेगा लेकिन यह अहमदियत पर क़ायम रहे। उनकी बेटी क़मर मुनीर साहिबा यहां इस्लामाबाद के हमारे वाक़िफ़ ज़िंदगी कारकुन हैं उनकी पत्नी हैं और एक बेटा ताहिर वक़ास है वह भी वक़्फ़ ए ज़िंदगी है। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। बड़े नेक और मुख़लिस वजूद थे। हमेशा मुस्कुराते रहते थे। कभी किसी बात पर ग़ुस्सा नहीं करते थे। पंज वक़्त नमाज़ का इल्तिज़ाम और समय पर समस्त चंदों की अदायगी किया करते थे। हाफ़िज़ सईदुर्रहमान साहिब उनके रिश्तेदार हैं। कहते हैं कि मेरे पिता ने उन्हें काम सिखाया क्योंकि उनके ग़ैर अहमदी रिश्तेदार उनसे सुलूक नहीं करते थे तो उनके पिता के पास आ गए थे। वहीं क़रीब ही उनकी दुकान थी। अपनी दुकान पर उनको काम सिखाया और फिर उनके घर में रहने लग गए और कहते हैं बड़े नियमित रूप के साथ नमाज़ के लिए मस्जिद जाते और अगली सफ़ों में जा कर बैठा करते थे। फिर तब्लीग़ का भी उतना शौक़ पैदा हो गया कि अपनी पत्नी के साथ अक्सर रब्वाह के साथ वाले गांव में तब्लीग़ करने के लिए गए होते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा मास्टर नज़ीर अहमद साहिब दारुल बरकात रब्वाह का है जो 4 अप्रैल को 80 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके पिता मियां उमर दीन साहिब मरहूम इब्न मियां करम दीन साहिब आफ़ दाता ज़ैद का ज़िला स्यालकोट के द्वारा से आई थी। उन्होंने 15 वर्ष की आयु में रहनुमाई पाई, स्वपन के द्वारा से उनको रहनुमाई हुई थी। और 1914 ई. या 15 ई. के जलसा में ख़लीफ़ा सानी के हाथ पर जा कर बैअत की। फिर मास्टर नज़ीर साहिब जब सरगोधा में 99 शुमाली में क़ियाम पज़ीर थे तो वहां उनका स्कूल के अध्यापकों की तरफ़ से बाईकॉट किया गया। उनके इसी स्कूल में उनके अपने 9 वर्ष के बेटे नसीर अहमद को एक तालिब ए इलम की तरफ़ से चाक़ू के वार से ज़ख़्मी भी किया गया इस पर मास्टर साहिब ने बड़े सब्र का प्रदर्शन किया। बहरहाल कुछ अरसा बाद यह बेटा उस वक़्त तो बच गया था लेकिन बुख़ार की वजह से वफ़ात पा गया। इस बेटे की मय्यत को क़ब्र में उतारते हुए बड़े सब्र और हौसले से उन्होंने फ़रमाया कि बेटा मुझे फ़ख़र है कि तुम अपने जिस्म पर जमात की सच्चाई का निशान लेकर जा रहे हो। जब तक यह उस गांव में टीचर रहे हैं वहां किसी मुअल्लिम या मुरब्बी की ज़रूरत नहीं पड़ी थी। स्वयं ही यह कर्तव्य भी सरअंजाम देते थे। फिर उनकी पोस्टिंग रब्वाह के नज़दीक हो गई तो रब्वाह मुंतक़िल हो गए। और फिर आप वहां भी ख़िदमत करते रहे। अत्यधिक बच्चों और बच्चीयों को क़ुरआन मजीद पढ़ाया। फिर रिटायरमैंट के बाद क़ारी आशिक़ साहिब से तरतील क़ुरआन करीम सीखी। फिर मुहल्ले में तरतीलुल-क़ुरआन की क्लास भी जारी की और फिर कोशिश यह होती थी कोई बच्चा या बच्ची ऐसी न हो जो मैट्रिक पास कर चुका हो और क़ुरआन न पढ़ना आता हो। यदि कोई ऐसा होता तो उस के घर पहुंच कर उसे क़ुरआन पढ़ाते। बड़ी छोटी उम्र से ही तहज्जुद गुज़ार थे और जब कोरोना की वजह से वहां रब्वाह में पाबंदी लगाई गई कि साठ वर्ष से ज़्यादा आयु के लोग मस्जिद न आएं तो घर में बड़े एहतिमाम से नमाज़ें और जुमा अदा किया करते थे। एक ख़ाब की बिना पर उनको यक़ीन था कि इसी वर्ष की आयु में मेरी वफ़ात होगी और वही हुआ। उनके चार बेटे हैं और एक बेटी हैं। बहरहाल उनके जो दो बेटे हैं बल्कि तीन बेटे वाकिफ ए ज़िंदगी हैं। एक तो अज़ीज़ साहिब हैं। हमारे यहां इस्लामाबाद में ही ख़िदमत कर रहे हैं। दूसरे नसीम अहमद साहिब रब्वाह में मुरब्बी सिलसिला हैं और तीसरे सईद अहमद अदील साहिब यह भी नाईजेरिया में मुरब्बी सिलसिला हैं। यह भी तदफ़ीन पर नहीं पहुंच सके। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उन सब लोगों के परिजनों को सब्र और हौसला अता फ़रमाए और उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

पाकिस्तान के हालात के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला वहां के लोगों को भी अमन और चैन और सुकून की ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और मुख़ालिफ़ीन के हमलों और छल को अपने फ़ज़ल से मलियामेट कर दे।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया : तुम लोगों के स्कूलों में यूनीफार्म नहीं होता। अधिकतर स्कूलों में यूनीफार्म हैं U.K में तो अधिकतर स्कूलों में तो यूनीफार्म होता है। पाकिस्तान के अधिकतर स्कूलों का यूनीफार्म होता है। यहां पर यदि पब्लिक स्कूल में शायद न हो, उन्होंने कहा हो कि common रखो। या शायद ग़रीब लोगों के कारण से या किसी और कारण से न हो। परन्तु जो प्राईवेट स्कूल हैं , मेरा विचार है जर्मनी में उनका यूनीफार्म निश्चित होगा। उन्होंने अपनी एक शनाख़्त रखी होती है, एक पहचान रखी होती है। तो कोई न कोई यूनीफार्म जामिया के लड़कों को देना था तो मुझे यह यूनीफार्म पसंद था, मैंने कहा तुम्हारा यह यूनीफार्म है उसे पहनो। यह कोई धर्म का विषय नहीं है। एक प्रशासनिक मसला है।

एक बच्चे ने कहा कि मैं दो शेअर नज़म के पढ़ सकता हूँ क्यों कि मैं अपने नाना अब्बू से यह वादा कर के आया हूँ?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यदि वादा पूरा न किया तो फिर क्या कहते थे मारुगा? चलो पढ़ दो।

इस लिए इस बच्चे ने निम्नलिखित दो अशआर पढ़े।

दो-घड़ी सब्र से काम लो साथियो आफ़त ए ज़ुल्मतो जोर टल जाएगा।
आह्-ए-मोमिन से टकरा के तूफ़ान का रुख पलट जाए गा रुत बदल जाएगा।।
तुम दुआएं करो यह दुआ ही तो थी जिसने तोड़ा था सिर किबरे नमरूद का।
है अज़ल से यह तक़दीर नमरूदियत आप ही आग में अपनी जल जाएगी।।

एक बच्चे ने कहा कि :आप अभी Aachen की मस्जिद का उद्घाटन करके आए हैं तो आपको मस्जिद केसी लगी।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : तुम Aachen से हो? और जुमा कहाँ पढ़ते हो

इस पर वक्फे नौ लड़ने कहा कि मैं आकिन की क़रीबी जमाअत से हूँ और जुमा अपनी जमाअत में पढ़ता हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मस्जिदें सारी अच्छी होती हैं हर वह मस्जिद अच्छी होती है जिसकी आबादी अच्छी हो। मस्जिदों की इमारते तो ख़ूबसूरत बना देते हो। मस्जिद की असल ख़ूबसूरती वहां के नमाज़ियों से बनती है। अब देखते हैं कि वहां की जमाअत उसको कितना मज़ीद ख़ूबसूरत बनाती है।

एक बच्चे ने कहा कि में Abitur के बाद जामिया में जाना चाहता हूँ। क्या जामिया के मध्य कुछ और भी study कर सकते हैं या नहीं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : बेहतर यही है कि जामिया की study कर लो। जामिया के मध्य जामिया की ही शिक्षा प्राप्त करो तो ज़्यादा बेहतर है। और यदि इतने brilliant हुए कि जामिया की इंतिज़ामीया ने समझा कि तुम्हें कुछ और पढ़ाया जा सकता है तो आज्ञा दी भी जा सकती है। पाकिस्तान में कई दफ़ा जामिया के मध्य कुछ लड़कों को जो ज़्यादा होशयार होते हैं F.A और Graduation इत्यादि करवाई जाती है। परन्तु यदि यह साबित हो जाए कि student अच्छा है और किसी विशेष मज़मून की ओर उसका रुजहान है, उसका शौक़ है तो इस में specialize करवाया जा सकता है। तो वह जामिया पास करने के बाद भी कराया जाता है। यहां U.K जामिया से कुछ लड़के पास हुए हैं उनको अब हम विभिन्न विषयों में अर्थात वरसिटीज़ में graduation करवा रहे हैं।

एक वक्फे नौ बच्चे ने कहा कि मेरा प्रश्न है हम लोग जिनकी वफ़ात हो जाएगी उन को ज़मीन में ही क्यों दफ़नाते हैं?

इस के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : ज़मीन में दफ़नाते हैं तो मरने वालों का कोई न कोई इज्जत-ओ-एहतराम होना चाहिए। इस्लाम में एक सोच है कि इज्जत-ओ-एहतराम से उसको ज़मीन में दफ़न कर दो। और वहां एक निशान लगा दो जिस से ज्ञान हो कि यहां कौन दफ़न है। फिर उस क़ब्र पर जाके दुआएं पढ़ते रहो। अब कुछ अरसा के बाद ज़मीन में तो वह चीज़ नहीं रह सकती। जिस को भी दफ़नाया जाता है वह मिट्टी ही बन जाएगा। यह क़ानून-ए-क़ुदरत है कि एक समय में आके सब कुछ मिट्टी में मिल जाता है। हो सकता है जहां क़ब्रिस्तान में हम दफ़नाते हैं इस में हज़ारों क़ब्रें पहले ही बन चुकी हों। जहां तुम घर बनाते उन जगहों पर क़ब्रिस्तान हों तो बहर-ए-हाल यह एक इज्जत-ओ-एहतराम के लिए और एक याद के लिए और क़ब्र पर जाकर दुआ करने के लिए इस्लाम में यह तरीक़ है। अब हर कोम अपने मिर्तकों से इज्जत-ओ-एहतराम से प्रस्तुत आना चाहती है। ईसाई हैं वह दफ़नाते हैं , परन्तु कुछ ऐसे हैं वह समझते हैं कि इज्जत-ओ-एहतराम इसी में है कि उन्हें जला दिया जाए या हिंदूओं में यह रिवाज है कि वह मरने वाले के इज्जत-ओ-

एहतराम के लिए समझते हैं कि उसको हम जला दें ताकि उसकी राख को बंद कर के एक जगह रख लें तो उनके निकट वह ज़्यादा सत्कार है। इसी तरह अब पार्सी लोग हैं उनकी इज़्ज़त यह है कि उन्होंने बड़े-बड़े ऊंचे से मीनारे बनाए होते हैं और वहां एक गिरिल सी लगी होती है इस के ऊपर लगा के अपने मुर्दे रख देते हैं। वहां कव्वे, चीलें आ के उनको खाते रहते हैं। वह समझते हैं कि यही सत्कार है कि इस से अल्लाह की मख़लूक़ उसके मरने के बाद भी लाभ उठा रही है। तो एक सत्कार की सोच है अपने-अपने अंदाज़े के अनुसार प्रत्येक धर्म ने रखा हुआ है। इस्लाम यह कहता है कि बेहतरीन यही चीज़ है कि उस को ज़मीन में दफ़नाओ और क़ुरआन-ए-करीम ने भी यही शिक्षा दी। क़ुरआन-ए-करीम में आता है कि एक व्यक्ति ने जब अपने दूसरे भाई को क़तल किया तो उस को फिर अल्लाह तआला ने सबक़ देने के लिए एक कव्वे को भेजा और बताया कि किस तरह मिर्तकों को दफ़न करते हैं । उसने ज़मीन कुरेदी। उसने कहा मैं बड़ा बदक़िस्मत हूँ कि अपने मुर्दे की इज़्ज़त और सत्कार नहीं किया। एक अपने भाई को मार दिया और फिर ऊपर से उसका सत्कार नहीं कर रहा। इसका सत्कार यह है कि उसे इज़्ज़त से ज़मीन में दफ़ना दिया जाए और तुम दफ़नाते हो तो वहां यादगार भी रहती है। फिर जाकर उस पर दुआएं भी हो।

एक वक्फ़े नौ ने प्रश्न किया कि यदि हुज़ूर अनवर को पाकिस्तान में रहने की आज्ञा हो तो हुज़ूर कहाँ पर रहना ज़्यादा पसंद करेंगे। इंगलैंड में या पाकिस्तान में?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया : पाकिस्तान में रहने की आज्ञा दिलवा दो पाकिस्तान चला जाऊंगा। पाकिस्तान में रहने की आज्ञा तो मुझे है। परन्तु में पाकिस्तान में रह के न नमाज़ें पढ़ा सकता हूँ, न मैं ख़ुतबा दे सकता हूँ, न मैं वह काम कर सकता हूँ जो मेरे कर्तव्यों में दाख़िल हैं। इस लिए जब भी इन शा अल्लाह तआला हालात बेहतर होंगे और जिस ख़िलाफ़त के दौर में भी होंगे, अल्लाह बेहतर जानता है। तो मेरे विचार में कुछ अरसा ख़लीफतुल मसीह पाकिस्तान जाया करेगा, या मुझे अवसर मिलेगा तो जाऊंगा। परन्तु संसार के निज़ाम में और जिस तरह जमाअत अहमदिया में वुसअत पैदा हो चुकी है और यह मुलुक ज़्यादा developed हैं, अतिरिक्त इस के कि पाकिस्तान इतना develop हो जाए जितना यूरोप है तो फिर कुछ अरसा वहां रहेंगे और बाक़ी यहां से देख के संसार को कंट्रोल करना बेहतर है। सही तरह सबके साथ सम्पर्क रखना ज़्यादा उचित होगा। तो मेरा विचार है कि क्योंकि अब इंगलैंड में एक base बन चुका है और ज़्यादा काम यहां से ही होगा। परन्तु क़ादियान और पाकिस्तान आना जाना रहेगा। इस लिए हो सकता है कि हमें UK में भी अपने मर्कज़ को वसीअ करना पड़े।

एक वक्फ़े नौ ने प्रश्न किया कि हुज़ूर इतना ज़्यादा जमाअत के लिए काम करते हैं। आप के पास free time होता है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया हाँ यदि सोता हूँ तो free time होता है तो सोता हूँ। काम तो होते हैं परन्तु इसी काम में से कभी-कभी समय निकालना पड़ता है कभी वर्ष में एक दो दफ़ा एक-आध दिन के लिए outing भी करनी पड़ती है। मुझे shooting का शौक़ है तो मैं कभी-कभी दो तीन घंटे के लिए shooting पर चला जाता हूँ।

एक वक्फ़े नौ ने प्रश्न किया कि जब आपको अल्लाह तआला की ओर से कोई संदेश मिलता है तो आपको कैसे पता चलता है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हर जो नेक बात है वह अल्लाह तआला ही दिल में डालता है और फिर दिल में डालने के बाद बार-बार एहसास होता है कि इस को करना है। कई दफ़ा ज़हन में विभिन्न बातें होती हैं, परन्तु नमाज़ के इस, उदाहरण के लिए कई दफ़ा पता चल जाता है कि इस ओर ध्यान देनी है। तो इस तरह पता चल जाता है कि यह अल्लाह तआला की ओर से ही है ।

बच्चे ने दुबारा प्रश्न किया कि हुज़ूर को फ़रिश्ते नज़र आते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते दिखाई नहीं जाते। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर तो जिब्राईल आए वह विभिन्न शक्ल में दिखाए गए परन्तु विभिन्न अनबया पर भी जो फ़रिश्ते आते रहे विभिन्न सूरतों में आते रहे। और आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तुफ़ैल ही आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा ने एक दफ़ा एक फ़रिश्ते को देख लिया जिस ने अरकान-ए-इस्लाम और अरकान-ए-ईमान बताए थे ।

एक बच्चे ने कहा कि मेरा प्रश्न यह है कि हुज़ूर अनवर को जमाअत अहमदिया जर्मनी में क्या नज़र आ रहा है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : तुम, इतने लोग बैठे हैं, वाक़फ़ीन नौ नज़र आ रहे हैं तुम यह पूछना चाहते हो कि उसका भविष्य क्या नज़र आ रहा है? तो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मुझे आशा है इन शा अल्लाह जमाअत अहमदिया जर्मनी का भविष्य बड़ा अच्छा होगा। और जमाअत यहां फैलेगी और जर्मन क़ौम भी इन शा अल्लाह तआला अहमदी और हक़ीक़ी इस्लाम को स्वीकार करेगी। और हो सकता है कि यूरोप में स्वीकार करने वालों में सबसे पहले नंबर पर हों । इस बारे में मैं ख़ुतबा में पहले वर्णन कर चुका हूँ। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु भी वर्णन कर चुके हैं और बाक़ी भी शायद किसी ने किया था।

एक वक्फ़े नौ ने प्रश्न किया कि जब इन्सान वफ़ात पाते हैं तो वह या जहन्नुम में जाते हैं या जन्नत में, तो जब जानवर वफ़ात पाते हैं तो उनके साथ क्या होता है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : उनको तो अल्लाह तआला ने कोई अनुकरण करने की सलाहीयत नहीं दी हुई। जन्नत और जहन्नुम किस लिए है। किसी को सज़ा मिलती है, अच्छी और बुरी बात से सज़ा और प्रतिफल मिलता है। किसी को कोई reward मिलता है इनाम मिलता है तो अच्छी बात करने से मिलता है। और यदि तुम ग़लत काम करो तो तुम्हें सज़ा मिलती है? चाहे थोड़ी सी मिले। स्कूलों में भी मिलती है। तो क्या जानवरों को इतनी अक़्ल है। बिल्ली, कुत्ते को इतनी अक़्ल है कि वह अच्छे काम करे और बुरे काम न करे। अल्लाह तआला ने उसकी जो फ़ित्रत बनादी है उसने तो वही काम करना है। इस लिए उसके लिए प्रतिफल सज़ा कोई नहीं।

एक वक्फ़े नौ बच्चे ने कहा कि मेरे पास दो प्रश्न हैं। पहला प्रश्न यह है कि जब इन्सान मरता है वह ख़ुदा तआला के घर जाता है तो शरीर वैसा ही रहता है जैसा अब है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : शरीर तो तुम्हारा ज़मीन में दफ़न हो जाता है। रूह ऊपर चली जाती है। जब रूह ऊपर चली जाती है तो अल्लाह तआला उसको एक नया शरीर देता है और जब तक अल्लाह चाहे उस शरीर में रहना है या जहन्नुम में रहना है। सज़ा काटनी है या जन्नत में जाना है उसके फ़ैज़ पाने हैं। यह जो संसार का शरीर है यहीं रह जाएगा। अगले जहान में नया शरीर मिले गा और रूह यही होगी।

बच्चे ने कहा कि मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि क्या वक़्फ़ नौ पुलिस अफ़्सर बन सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यदि जमाअत अहमदिया की पुलिस है तो फिर तो बन सकते हैं। परन्तु यदि तुम में से किसी को पुलिस में जाने का शौक़ है कुछ दूसरे विभागों में भी जाते हैं, तो पूछ कर आज्ञा ले सकते हैं कि हमारा शौक़ है। यदि तुम्हें आज्ञा मिल जाए तो फिर तुम जा सकते हो। अन्यथा नहीं। यह उसूली फ़ैसला नहीं है individual के सम्बन्ध में अलग-अलग फ़ैसला होगा।

एक वक्फ़े नौ ने प्रश्न किया, मेरा प्रश्न है कि जब हम वफ़ात पाएँगे और हमारी रूह ऊपर चली जाएगी तो हम अल्लाह मियां को देख सकेंगे?

तो इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : फ़ौत होने पर आजकल जर्मनी वालों का बड़ा ज़ोर है। हम ज़िंदा हैं। अभी ज़िंदों के संसार में रह रहे हैं। कोई जीवन का भी ख्याल रखों। हाँ यदि अगले जहान की फ़िक्र पड़ गई है तो वह बजाय इतफ़ालुल अहमदिया के अन्सारुल्लाह को ज़्यादा होनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए फ़रमाया : अल्लाह तआला से जब प्रश्न उत्तर होंगे तो प्रकट है किस सूरत में देखते हो क्या शक्ल है, अल्लाह बेहतर जानता है कि वह अपने आपको किस तरह दिखाएगा। अल्लाह तआला कहता है कि मैं प्रश्न उत्तर जब करूँगा। वह कहेगा यदि तुमने अच्छे काम किए हुए तो चलो जन्नत में जाओ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि एक लंबी हदीस है जिस में वर्णन है कि ख़ुदा तआला किसी को जहन्नुम से निकालेगा फिर एक नज़ारा दिखाने के लिए सामने लाएगा। उगला step होगा और फिर उगला step इस के बाद फिर जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचेगा। तो फिर बंदा कहेगा अल्लाह तआला यहां ठंडी-ठंडी हवाएं आ रही हैं। तो यह नज़ारा भी दिखा दिया और यह भी दिखा दिया। बिल्कुल दरवाज़े पर ले गया, इस प्रकार मैं झांक कर अंदर भी देख रहा हूँ, लोग मौजें कर रहें हैं तो थोड़ा सा अंदर जा के और क़रीब से देख लूं? तो अल्लाह तआला हंस के कहेगा जाओ तुम्हें ज़्यादा ही शौक़ है तो चलो तुम्हें बख़्श दिया। जाओ चले जाओ जन्नत में। तो यह लंबी हदीस है उसका मैंने ख़ुलासा बता दिया है।

(शेष......................)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

और सम्मान्नीय ओहदादार हैं। बिना पूरी तसल्ली पाने के यह इक़रार कर सकते हैं कि हमने इतने आसमानी निशान अपनी आंख से स्वंय देखे? और जबकि वे लोग वास्तव में ऐसा इक़रार करते हैं जिस के सत्यापन के लिए प्रत्येक समय व्यक्ति मुकज़्ज़िब को धारण है, तो फिर सोचना चाहिए कि इन समस्त स्वीकारोक्ति का इच्छुक सत्यता के लिए यदि वह वास्तव में सत्यता का इच्छुक है क्या नतीजा होना चाहिए। कम से कम एक अज्ञान इतना तो ज़रूर सोच सकता है कि यदि इस गिरोह में जो लोग हर तरह से

शिक्षित और ज्ञानी और रोज़गार वाले और अल्लाह की कृपा से आर्थिक हालतों में दूसरों के मुहताज नहीं हैं। यदि उन्होंने पूरे तौर पर मेरे दावे पर यक़ीन प्राप्त नहीं किया और पूरी तसल्ली नहीं पाई तो क्यों वे अपने घरों को छोड़कर और प्रियों से अलग हो कर ग़रीबी और सफर की अवस्था में इस स्थान मेरे पास व्यतीत करते हैं और अपने अपने सामर्थ्य के अनुसार आर्थिक सहायता में मेरे सिलसिला के लिए फिदा और कुरबान हैं ।

हर एक बात का समय है। बहार का भी समय है और बरसात का भी समय है और कोई नहीं जो ख़ुदा के इरादे टाल दे।

1 अगस्त 1899 ई

अल्लाह तआला की मार्फ़त (अनुभूति) के विषय पर एक हिन्दू साधु से वार्तालाप

1 अगस्त 1899 ई को मग़रिब के बाद हज़रत अक़दस की मुलाक़ात के लिए एक हिंदू साधू साहिब जो अपने सम्प्रदाय के प्रसिद्ध गुरु हैं तशरीफ़ लाए और हुज़ूर से बातें करते रहे। यह इस वार्तालाप का सार या अभिप्राय है जिसको हाफ़िज़ा की सहायता से हमने अपने शब्दों में लिखा है। (सम्पादक अलहकम)

हज़रत अक़दस आ: आपके यहाँ योग का तरीक़ा सनातन धर्म के नियस पर है या आर्या समाज के नियम पर।

साधु : सनातन धर्म के अनुसार।

हज़रत अक़दस : आर्या समाज एक ऐसा सम्प्रदाय है जिसमें सिर्फ कहना है करना नहीं

साधु: बेशक ये लोग गरूओ की ज़रूरत नहीं समझते और यहां तक कि दयानंद को भी गुरु के रूप में नहीं मानते। कहते हैं कि वह एक राह बता गया है , इस पर चलना चाहिए।

हज़रत अक़दस: आपके योग के लिए बड़ी बड़ी तपस्याएं हैं।

साधु: जी हाँ

हज़रत अक़दस: इस तपस्या के बाद क्या कोई ऐसी शक्ति और ताक़त पैदा हो जाती है जिससे उस प्रेम का पता लग जाए जो इस तपस्या करने वाले को ख़ुदा के साथ होता है क्योंकि मुहब्बत का पता और वजूद उस समय तक नहीं मिलता,जब तक कि दोनों तरफ़ से सम्पूर्ण मुहब्बत का प्रकटन न हो। इधर से मुहब्बत के जोश में हर किस्म के दुख और तकलीफ़ को बर्दाश्त करने के लिए तैयार हो और उधर से अर्थात परमेश्वर की तरफ़ से ऐसा प्रकाश (रोशनी या नूर)उसको मिले कि वह आम तौर पर लोगों में स्पष्ट हो जाए।

साधु: हाँ कुछ बल और ताक़त आ ही जाता है।

हज़रत अक़दस :भला कोई ऐसी ताक़त और बल की बात आप सुनाएँ जो आपकी सुनी हुई न हो बल्कि देखी हुई हो। अर्थात आपके गुरु में या उनके गुरु में। क्योंकि बात यह है कि सुनी हुई बात कुछ ऐसी प्रभावित करने वाली नहीं होती चाहे वह कितनी ही सही क्यों न हो। क़िस्से कहानी के अन्तर्गत समझी जाती है। जैसे उदाहरणत: कोई कहे कि एक देश है,वहां आदमी उड़ा करते हैं। अब हमको उसके मानने में ज़रूर शंका होगी। क्योंकि हमने न तो ऐसे उड़ते देखे हैं न ख़ुद अड़े हैं। अत: ईमान की क़ुव्वत और विश्वास के बढ़ाने के लिए सुनी सुनाई बातें लाभ नहीं पहुंचाती हैं। बल्कि नया तथा नवीन जो सामने देखी जाएं और इससे भी बढ़कर वे जो ख़ुद इन्सान की अपनी हालत पर घटित हों। अत: मेरे इस सवाल से यह उद्देश्य है कि आप कोई ऐसी बात बतलाएं, जो इस तपस्या करने वालों में आपने देखी हों या सुनी हों नू

साधु: हाँ हमारे जो गुरु थे उनमें कई कई बातें ऐसी थीं जो दूसरे के मन की बात बूझ लेते थे और फिर जो मुँह से कह देते थे हो जाता था और जो उन के गुरु थे उनमें भी बहुत सी बातें ऐसी होतीं थीं परन्तु उनको देखा नहीं; परन्तु देखने के बराबर है,क्योंकि उनको मरे कोई अस्सी वर्ष के लगभग हुए और उनके देखने वाले अभी मौजूद हैं।

हज़रत अक़दस: आपने भी कोई तपस्याएं की थीं?

साधु जी हाँ। मैंने भी की हैं।

हज़रत अक़दस: क्या किया?

साधू: पहले चिल्ला कशी किया करते थे यहां तक कि आठ महीने का एक ही चिल्ला है।

हज़रत अक़दस: इस में क्या खाते थे?

साधु पहले चावलों का आटा खाया करते थे। फिर सिर्फ पानी जो पका कर रखा हुआ था अर्थात एक गागर का आधा जब रह जाए तो वह रख लिया करते थे और इस में से सैर कच्चा सुबह को पी लिया करते थे और उसी वक़्त पेशाब कर लिया करते थे और फिर कुछ नहीं।

हज़रत अक़दस: क्या उस में लोहा इत्यादि तो न होता था?

साधु: नहीं

हज़रत अक़दस: फिर क्या इस तपस्या की हालत में आपको कुछ अदभुत दृष्य नज़र आए?

साधु: हाँ कभी रोशनी नज़र आती थी जो अंदर हो जाती थी और दूर दूर से आते-जाते आदमी नज़र आ जाते थे। (इसके बाद कुछ मिनट ख़ामोशी रही। फिर उस ख़ोमाशी को साधू साहिब ने अपने इस एक सवाल से तोड़ा।) (सम्पादक)

साधु: क्या आप परमेश्वर को आकार मानते हैं या निराकार?

(हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब ने इस अवसर पर व्याख्या के रूप में निवेदन किया कि मूर्ती के योग्य या ऐसा ख़ुदा कि मूर्ती की ज़रूरत न हो।

इस्लाम का ख़ुदा

हज़रत अक़दस: हम जिस ख़ुदा को मानते हैं। उस की इबादत और उपासना के लिए न तो इन तप्सयाओं और रियाज़तों की ज़रूरत है और न किसी मूर्ती की ज़रूरत है। और हमारे धर्म में ख़ुदा तआला को प्राप्त करने और उस के सामर्थयों के दृष्य देखने के लिए ऐसे कष्टों के सहन करने की कुछ भी ज़रूरत नहीं,बल्कि वह अपने सच्चे प्रेमी भगतों को आसान मार्ग से जो हमने ख़ुद अनुभव करके देख लिया है ,बहुत शीघ्र मिलता है। इन्सान यदि उसकी तरफ़ एक क़दम उठाता है तो वह दो क़दम आगे उठाता है। इन्सान यदि तेज़ चलता है तो वह दौड़ कर उसके हृदय में प्रकाश करता है।

अल्लाह तआला की ग़ैब की हालत में रहने की हिक्मत

मेरे निकट मूर्ती बनाने वालों ने ख़ुदा तआला की इस हिक्मत और भेद को नहीं समझा जो उसने अपने आपको ज़ाहिर में एक ग़ैब की हालत में रखा है। ख़ुदा तआला का ग़ैब में ही होना इन्सान के लिए समस्त तलाश और खोजों और समस्त अनुसन्धानों के राहों को खोलता है। जितने ज्ञान और मआरिफ़ इन्सान पर खुले हैं,वे यद्यपि मौजूद थे और हैं परन्तु एक समय में वे ग़ैब में थे। इन्सान की चेष्टा और कोशिश की क़ुव्वत ने अपनी चमकार दिखाई और मूल

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

“अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।”

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 20 May 2021 Issue No.20

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

लक्ष्य को पा लिया। जिस तरह पर एक सच्चा आशिक़ होता है। इसके महबूब और माशूक़ की गैरहाज़िरी और आँखों से बज़ाहिर दूर होना उसकी मुहब्बत में कुछ अन्तर नहीं डालता बल्कि वह ज़ाहरी वेदना अपने अंदर एक किस्म की सोज़िश पैदा करके इस प्रेम भाव को और भी तरक़्क़ी देता है। इसी तरह पर मूर्ती लेकर ख़ुदा को तलाश करने वाला कब सच्ची और हक़ीक़ी मुहब्बत का दावादार बन सकता है; जबकि मूर्ती के अतिरिक्त उसका ध्यान पूर्ण रूप से उस पवित्र और कामिल सुन्दर हस्ती की तरफ़ नहीं पड़ सकता। इन्सान अपनी मुहब्बत का स्वंय परीक्षा करे। यदि उसको इस वेदना पूर्ण आशिक़ की तरह चलते फिरते, बैठते उठते सारांक्ष हर हालत में बेदारी की हो या ख़्वाब की, अपने महबूब का ही चेहरा नज़र आता है और कामिल ध्यान उसी तरफ़ है तो समझ ले कि वास्तव में मुझे ख़ुदा तआला से एक इशक़ है और ज़रूर ज़रूर ख़ुदा तआला का प्रकाश और प्रेम मेरे अंदर मौजूद है,परन्तु यदि मध्य मामलों और बाहरी बंधन और रुकावटें उसके ध्यान को फिरा सकती हैं और एक क्षण के लिए भी वह विचार उसके दिल से निकल सकता है तो मैं सच कहता हूँ कि वह ख़ुदा तआला का आशिक़ नहीं और उससे मुहब्बत नहीं करता और इसी लिए वह रोशनी और नूर जो सच्चे आशिक़ों को मिलता है उसे नहीं मिलता। यही वह स्थान है जहां आकर अधिकतर लोगों ने ठोकर खाई है और ख़ुदा का इन्कार कर बैठे हैं। अज्ञानों ने अपनी मुहब्बत की परीक्षा नहीं की और इस का वज़न किए बिना ही ख़ुदा पर कुधारणा करने वाले हो गए हैं। अत: मेरे विचारों में ख़ुदा तआला का ग़ैब में रहना इन्सान के सौभाग्य और नेकी को तरक़्क़ी देने की लिए है और इस की रुहानी शक्तियों को साफ़ करके चमकाने देने के लिए ताकि वह नूर इस में प्रकाश हो। हम जो बार-बार इश्तिहार देते हैं और लोगों को अनुभव के लिए बुलाते हैं। कई लोग हमको दूकानदार कहते हैं। कोई कुछ बोलता है कोई कुछ। अत: इन भांत भांत की बोलियों को सुनकर जो प्रत्येक देश में जो इस दुनिया पर आबाद है यूरोप,अमरीका इत्यादि में इश्तिहार देते हैं इस का उद्देश्य क्या है।

हमारा उद्देश्य

हमारा उद्देश्य इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं ताकि लोगों को उस ख़ुदा की तरफ़ मार्गदर्शन करें जिसे हमने स्वंय देखा है। सुनी सुनाई बात और क़िस्सा के रंग में हम ख़ुदा को दिखाना नहीं चाहते बल्कि हम अपनी ज़ात और अपने वजूद को प्रस्तुत करके दुनिया को ख़दा तआला का वजूद मनवाना चाहते हैं। यह एक सीधी बात है। ख़ुदा तआला की तरफ़ जितना कोई क़दम उठाता है ख़ुदा तआला उससे अधिक तीव्रता और तेज़ी के साथ उसकी तरफ़ आता है। दुनिया में हम देखते हैं कि जब एक सम्मान्नीय आदमी का प्रिय और सम्मान योग्य समझा जाता है तो क्या ख़ुदा तआला का सानिध्य प्राप्त करने वाला अपने अंदर उन निशानों में से कुछ भी हिस्सा न लेगा जो ख़ुदा तआला की क़ुदरतों और बे-इंतिहा ताक़तों का नमूना हों।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 295 से 299 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 1 का शेष

अलैहि व सल्लम) को बातों में लगाऊँगा तुम पीछे से तलवार के द्वारा उनका काम तमाम कर देना। आमिर ने कहा कि इस तरह बड़ा ख़तरा पैदा हो जाएगा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी हमें क़तल कर देंगे। उसने उत्तर दिया कि कोई भय की बात नहीं हम दियत (वह धन जो किसी अन्य व्यक्ति को मार डालने या अंग-भंग करने के बदले में दिया जाय) दे देंगे। इसलिए वे दोनों वापस आए। अर्बुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से बातें करने लगा और आमिर ने चाहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पीछे से तलवार मार दे परन्तु वह तलवार उठा कर रह गया और वार नहीं कर सका। हदीसों में तो आता है कि उसके हाथ पर फ़ालिज हुआ। लेकिन चूँकि इन्ही हदीसों में यह वर्णन भी है कि बाद में वह सवार हो कर गया और हाथ का इस्तिमाल करता रहा इस से मालूम होता है कि फ़ालिज नहीं हुआ था बल्कि अल्लाह तआला ने उस के ह्रदय पर रोब तारी कर दिया और उसे हमला करने का साहस नहीं हुआ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रोब से उस का हाथ खड़ा का खड़ा रह गया। लिखा है कि इतने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुड़ कर देखा तो उसने हाथ तलवार के क़बज़ा पर रखा हुआ था। हुज़ूर उस के इरादा को भाँप गए और पीछे हट गए। परन्तु उन दोनो से कुछ आपत्ति नहीं की। इसके बाद वे दोनों वहां से चले गए। अर्बुद पर रास्ता में बिजली गिरी और आमिर कार बंकुल से हलाक हो गया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हम इस घटना पर لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ वाली आयत चस्पाँ किया करते थे। (रूहुलमानी) इस रिवायत से मालूम होता है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु इस आयत को आम समझने के बजाय ख़ास रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए समझा करते थे। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का समस्त नबुव्वत का युग इस हिफ़ाज़त का प्रमाण देता है। इसलिए मक्का मुअज़्ज़मा में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त फ़रिश्ते ही करते थे अन्यथा इस क़दर दुश्मनों में घिरे हुए रह कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान किस तरह सुरक्षित रह सकती थी। हाँ मदीना तशरीफ़ लाने पर दोनों किस्म की हिफ़ाज़त आप को हासिल हुई। आसमानी फ़रिश्तों की भी और ज़मीनी फ़रिश्तों अर्थात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की भी।

बदर की जंग इस ज़ाहिरी और बातिनी हिफ़ाज़त की एक निहायत उचित उदाहरण है। हुज़ूर जब मदीना तशरीफ़ ले गए थे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना वालों से मुआहिदा किया था कि यदि आप मदीना से बाहर जाकर लड़ेंगे तो मदीना वाले आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का साथ देने पर मजबूर नहीं होंगे। बदर की लड़ाई में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार और मुहाजिरीन से लड़ने के बारे में मश्वरा फ़रमाया। मुहाजिरीन बार-बार आगे बढ़ कर मुक़ाबला करने पर-ज़ोर देते थे लेकिन हुज़ूर उनकी बात सुनकर फिर फ़र्मा देते कि बे लोगो मश्वरा दो। जिस पर एक अंसारी (साद बिन मआज़) ने कहा क्या हुज़ूर की मुराद हम से है। हुज़ूर ने फ़रमाया हाँ। उसने कहा कि बे-शक हम ने हुज़ूर से मुआहिदा किया था कि अगर बाहर जाकर लड़ने का अवसर होगा तो हम हुज़ूर का साथ देने पर मजबूर नहीं होंगे लेकिन वह वक़्त और था। जबकि हमने देख लिया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा के रसूल सच्चाई पर हैं तो अब इस मश्वरा की क्या ज़रूरत है। यदि हुज़ूर हमें हुक्म दें तो हम अपने घोड़े समुंद्र में डाल देंगे। हम अस्हाबे मूसा अलैहिस्सलाम की तरह यह नहीं कहेंगे कि तू और तेरा रब जाकर लड़ो, हम यहां बैठे हैं। बल्कि हम हुज़ूर के दाएं बाएं, आगे और पीछे लड़ेंगे और दुश्मन आप तक हरगिज़ नहीं पहुंच सकेगा जब तक कि वे हमारी लाशों को रौंदता हुआ न गुज़रे। यह मुख़्लिसीन भी मेरे नज़दीक इन मुअक्केबात में से थे जो ख़ुदा तआला ने हुज़ूर की हिफ़ाज़त के लिए निर्धारित किए थे। एक सहाबी कहते हैं कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ तेराह जंगों में शामिल हुआ हूँ परन्तु मेरे दिल में बार बार यह ख़ाहिश पैदा हुई है कि मैं बजाय उन लड़ाईयों में हिस्सा लेने के इस फ़िक़रा का कहने वाला होता जो साद बिन मआज़ के मुँह से निकला।

(तफ़सीर कबीर, भाग 3 पृष्ठ 391प्रकाशन क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad